अनुक्रमणिका

अध्याय/पाठ		पृष्ट क्र.
१.	परमेश्वर की खोज	०१
२.	परमेश्वर ★	०३
३.	यीशु परमेश्वर हैं ★	०७
४.	यीशु के शिक्षण ★	१०
५.	वचन *	१३
६.	पाप *	१५
७.	क्रूस *	१९
८.	पश्चाताप *	३२
९.	बप्तिस्मा *	३८
१०.	यीशु प्रभु हैं *✦	४३
११.	कलीसिया *	४८
१२.	कीमत चुकाना	५१
१३.	पुनरुत्थान	५६
१४.	पवित्र आत्मा	६०
१५.	महान कार्य	६३

संशोधित सुसमाचार के रक्षक पाठ

ये सुसमाचार के संशोधित किये हुए रक्षक पाठ हैं। इन पाठों को आप अपनी इच्छानुसार किसी भी क्रम में उपयोग कर सकते हो, क्योंकि हमारा उद्देश्य है परमेश्वर के खोजनवाले को विश्वास के मूलभूत नीवों को जानने में सहायता मिले । परमेश्वर के खोजी को मसीही बनने के लिये सिर्फ इन्हीं पाठों को सिखाया जाए ऐसा नहीं है। उनका मन परमेश्वर की ओर मोडने के लिये हमें कई और वचनों का भी उपयोग करने की आवश्यकता पड सकती है। ये शिक्षण हमारे अलग-अलग शिर्षक के पाठ जिन्हें हम सिखा रहे हैं उनका एकमात्र विस्तारित रूप है ऐसा नहीं है। भविष्य में हम और भी पाठ इसमें जोड सकते हैं।

इन पाठों का यह एक साधारण क्रम है जिसका उपयोग खोजी को सिखाने में किया जा सकता है।

बप्तिस्मा के पहले-नींव डालनेवाले पाठ

पाठ	उद्देश्य
१. **परमेश्वर की खोज**	– परमेश्वर के खोजी को गम्भीरता से परमेश्वर की खोज करने में मद्द करने के लिये.
२. **परमेश्वर** ★	– वचनों के परमेश्वर को जानने में परमेश्वर के खोजी कि मद्द के लिये.
३. **यीशु परमेश्वर हैं** ★	– यीशु के इश्वरत्व के बारे में सिखाने के लिये
४. **यीशु के शिक्षण** ★	– यीशु के कुछ शिक्षणों और दावों की जानकारी के लिये.

पाठ	उद्देश्य
५. वचन *	– मसीह में विश्वास को मचबूत बनाने के लिये पवित्र शास्त्र सुनने और पढ़ने का कितना महत्व है इस बात पर ज़ोर देने के लिये।
६. पाप *	– खोजी के जीवन में परमेश्वर और उसकी क्षमा की कितनी आवश्यक्ता है ये बताने के लिये।
७. क्रूस *	– हमारे उद्धार के लिये क्रूस के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह को जानने के लिये।
८. पश्चाताप *	– जैसे–जैसे हम अनुग्रह को समझते हैं तो साथ ही साथ आत्मिक पश्चाताप की आवश्यक्ता को सिखाने के लिये।
९. बप्तिस्मा *	– यह सिखाने के लिये कि कैसे क्षमा प्राप्त करें और एक मसीही बनें।
१०. यीशु प्रभु हैं *	– जिन्होंने यीशु पर अपना विश्वास लाया है उनको ये सिखाने के लिये कि यीशु के पिच्छे चलने का सही अर्थ क्या है।
११. कलीसिया *✦	– नए विश्वासी को कलीसिया के लिये परमेश्वर की योजनाओं के बारे में सिखाने के लिये ताकि वे विश्वास में कायम रहकर उसका उपयोग करें।
१२. कीमत चुकाना	– नए विश्वासी को यीशु के शीष्य के रुप में एक संकल्पित जीवन जीना सिखाने के

* का अर्थ है – सभी के लिये आवश्यक पाठ ।

★ का अर्थ है – गैर मसिहियों के साथ किये जाने वाले आवश्यक पाठ ।

*✦ मसीही परिवार से आए व्यक्ति को पाप के पाठ से पहले सिखाया जा सकता है ।

बप्तिस्मा के बाद – परिपक्व (अधिक समझदार) करने वाले पाठ

पाठ	उद्देश्य
१३. पुनरुत्थान	– मसीही धर्म के न्यायसिद्ध सबूतों के बारे में सिखाता है।
१४. पवित्र आत्मा	– एक नए मसीही होने के नाते हमारे जीवन में पवित्र आत्मा कौनसा किरदार निभाता और क्या काम करता है, इसके बारे में सिखाता है।
१५. महान कार्य	– एक मसीही का काम क्या है, यह सिखाता है।

अध्याय –१

परमेश्वर की खोज

उपयोग किये गए वचन :

१. मत्ती ७:७, १३–१४	२. लूका १३:२२–३०
३. मत्ती ६:२५–३३	४. इब्रानियों ११:६
५. मत्ती १३:४४–४६	६. प्रेरित ८:२६–३९

उद्देश्य – परमेशर की खोज एक ऐसा पाठ है जो कि परमेश्वर से रिश्ता बनाए रखने के लिये किस बात की आवश्यकता पडती है, इस बात को स्पष्ट करता है ।

१. मत्ती ७:७, १३–१४

पवित्र शास्त्र का एक महान वादा हर कोई जो ढुँढता है, पाता है। और पवित्र शास्त्र की एक महान चेतावनी और थोडे हैं, जो उसे पाते हैं। अगरसिर्फ थोडे ही परमेश्वर को पाते हैं तो कितने लोग सही रुप से उसे खोजते हैं ?

२. लूका १३:२२–३०

हाँ, केवल थोडे ही उध्दार पाएँगे, इसलिये उसे खोजने का हरएक प्रयत्न करो । वे जो 'यूँ ही' प्रयत्न करते हैं वे पकडे जाएँगे और परमेश्वर के राज्य में अस्वीकार किये जाएँगे । परमेश्वर को ढुँढने में आप हर वो प्रयास कैसे कर सकते हैं ?

३. मत्ती ६:२५–३३

आपके जीवन की वो कौनसी ऐसी आवश्यकताएँ और चिन्ताएँ हैं जो परमेश्वर को ढुँढने की प्राथमिकता में आपको रोक सकते या आपका ध्यान बँटा सकते हैं ? परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता को पहला स्थान देने के लिये आपको किन–किन बातों में बदलाव लाना होगा ?

४. इब्रानियों ११:६

परमेश्वर उनको जो उसे पूरे मन से ढुँढते हैं प्रतिफल देते हैं ।

५. मत्ती १३:४४–४६

यहाँ पर एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जो उस अनमोल खजाने को जो उसे मिला था पाने के लिये अपना सर्वस्व त्याग करने के लिये तैयार था ।

६. प्रेरित ८:२६–३९

यहाँ पर एक ऐसे खोजी का उदाहरण है जो दीनता से परमेश्वर को प्रथम स्थान देता है और इस तरह परमेश्वर और असीम आनन्द दोनों ही को पाता है। इस बात पर ध्यान दें कि कुश देश का वह खोजा एक व्यस्त व्यक्ति था, एक ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर को खोजने में दूसरे व्यक्ति के मद्द की आवश्यकता पडी, एक ऐसा व्यक्ति जो पवित्र शास्त्र का उपयोग परमेश्वर को ढुँढने के मार्गदर्शक के रुप में कर रहा था ।

अतिरिक्त उपयोगी वचन :

- प्रेरित १७:१०–११
- व्यस्थाविवरण ४:२८–३१
- २ इतिहास १५:१–४
- यशायाह ५५:६
- लूका १९:१, १०
- यिर्मयाह २९:१०–१३
- प्रेरित १७:२२–२७
- सभोपदेशक १२:१, १३–१४
- २ इतिहास ७:१४

अध्याय –२

परमेश्वर

उपयोग किये गए वचन		
१. प्रेरित १७:२४–३०	२. भ.सं. १३५:१५–१७	
३. यिर्मयाह १०:५	४. व्यवस्थाविवरण ५:८–९	
५. १ कुरुन्थियों १०:१४	६. प्र. वाक्य २१:८	७. युहन्ना ४:२४

उद्देश्य : इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है कि लोगों को पवित्र शास्त्र के परमेश्वर के बारे में बताएँ – वह एक जीवित परमेश्वर है ना कि एक मूर्ती।

आपके परमेश्वर की प्रतिमा (रुप) क्या है ? किस परमेश्वर की आप आराधना करते हो ? ये प्रश्न केवल आपके लिये हैं ताकि आप खोजी के पार्श्वभूमी और उसके विश्वास को जान सको । आओ हम पवित्र शास्त्र में देखें कि परमेश्वर कौन है। आओ हम प्रेरित १७:२४ में जाएँ और पढें ।

१. प्रेरित १७:२४–३०

वचन २४ : इस वचन के अनुसार परमेश्वर कौन है ? परमेश्वर सृष्टीकर्ता है। पवित्र शास्त्र के अनुसार परमेश्वर कहाँ नही रहते ? परमेश्वर मनुष्यों के बनाए हुए इमारतों में नही रहते ।

व. २५ : क्या परमेश्वर हमसे किसी चीज की आशा रखते हैं ? नहीं । क्यों ? क्योंकि वो स्वयं ही हमें सब कुछ देते हैं ।

व. २६ : परमेश्वर ने हमारी सृष्टि की और हमें अपने – अपने नियत स्थान में रखा जहाँ हम रहते हैं – मुम्बई, पूना, आदि । आप अब यहाँ क्यों हो ? यह परमेश्वर की योजना है। ऐसा क्यों ? क्योंकि परमेश्वर चाहते है कि उसे ढूँढे, उसके पास पहुँचे और उसे **पाएँ** । परमेश्वर हमसे रिश्ता जोडना **चाहते** हैं।

व. २७ : क्या वो हमसे बहुत दूर हैं जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं कि वह ऊँचे पहाडो या समुंद्रो के पार रहता है, वे लम्बी लम्बी यात्राएँ भी करते हैं कि उसे पा जाएँ ? नही । पवित्र शास्त्र कहता है कि वो हमारे पास है। यदि हम उसे ढुँढे तो पाएँगे ।

व. २८ : हम उसी के वंश हैं इसका क्या अर्थ है ? यह कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं। क्या हममें जीवन है ? हाँ । यदि हम में जीवन है तो परमेश्वर का क्या जिसके हम बच्चे हैं। क्या वह जीवित है या मृत ? वह **जीवित** है। हमारा परमेश्वर एक जीवित परमेश्वर है।

व. २९ : इसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ है कि परमेश्वर एक मृत मूर्ती नही है जो मनुष्य की कल्पना और कारीगरी से गढे गए हों । हमें किसने बनाया ? परमेश्वर ने । क्या हम उसे बना सकते हैं ? नही । यही हो रहा है बाजार में किमत देकर हम परमेश्वर को खरीद सकते हैं। यदि मिट्टी की मूरत है तो हम उसे रु. १० में खरीद सकते हैं, यदि उस पर रंग चढाया गया हो तो रु. १०० या यदि वह सोने में गढा है तो रु. १,००,००० और यदि उसमें हीरे जवाहरात गढे हों तो करोड रुपये भी । पर क्या कोई धातु या उसकी खूबसूरती एक मूर्ती को परमेश्वर बना सकती हैं ? कभी नही । लोग बनाए हुए चीजों की पूजा करते हैं। मूर्ती, चित्र, तस्वीर, सूर्य, चाँद, साँप आदि बजाए इसके कि वे सृष्टिकर्ता की आराधना करें।

व ३० : एक बार जब हमें जीवित परमेश्वर की सच्चाई का पता चलता है तब उसके बाद परमेश्वर हमसे क्या अपेक्षा करते हैं ? वो चाहता है कि हम पश्चाताप करें । पश्चाताप का मतलब है मन फिराना । इसका अर्थ है कि वह चाहता है कि हम मूर्ती पूजा करना छोड दें और उनसे कोई नाता ना रखें । इसके बारे में आपके अपने विचार क्या हैं ?

२. भजन संहीता १३५:१५–१७ :

यह वचन इस सच्चाई के बारे में बात करता है कि मूर्तीयों में जान नही होती ।

अ. मूर्तियाँ मनुष्यों ने बनायी हैं। इसलिये प्रश्न यह है कि क्या इन्सान भगवान को बना सकता है ? नहीं । लोग सृष्टिकर्ता के बजाए गढे हुए चीजों की आराधना कर रहे हैं ।

ब. मूर्ती के अलग–अलग अंग होते हैं। पर वे उसका उपयोग नहीं कर सकते । वे लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दे सकते । इम इन्सान इन मूर्तियों से

कहीं बेहतर हैं – हम कमसे कम देख सकते हैं, सुन सकते हैं समझ सकते हैं और महसूस कर सकते हैं। पर इसका अर्थ ये नही कि हम भगवान हैं।

क. मूर्ती में साँस (जीवन) नही होता ।

३. यिर्मयाह १०:५ – अ. मूर्ती खेत में रखे उस पुतले के समान है जो पक्षियों को डराने के लिये लगाए जाते हैं । वे कुछ नहीं कर सकते फिर भी पक्षी उनसे डरते हैं। मूर्ती आपका कुछ नहीं बिगाड सकती फिर भी उससे जुडे अन्धविश्वास और कहानियों के कारण उसे छोडने से लोग डरते हैं। मूर्ती शक्तिहीन है। **मूर्तियों से ना डरें** ।

ब. मूर्ती को ढोना पडता है, क्योंकि वो चल नहीं सकते । यदि हमारे परमेश्वर को चलने में हमारी मदद् की आवश्यकता पडती है तो हम कमजोर मनुष्यों का क्या होगा ?

क. मूर्तियों से ना डरें । वो आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते । मूर्तियों के बारे में हर अन्धविश्वास को फेंक दो । ऐसे कौनसे अन्धविश्वास पर आप विश्वास करते हो ? क्या आप जाने हैं कि दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा विशेष रुप से किस बारे में बात करता है ? आओ हम देखें ।

४. व्यवस्थाविवरण ५:८-९ – परमेश्वर हमें आज्ञा देते हैं कि किसी भी रुप में अपने लिये कोई मूर्ती ना बनाना । और फिर बहुत विशेष रुप से परमेश्वर हमें आज्ञा देते हैं कि हम किसी मूर्ती के आगे अपना सर ना झुकाएँ । क्या हम परमेश्वर की आज्ञा को ना मानें ? नहीं । हमें किसी भी मूर्ती, चित्र या मनुष्य की आराधना करना बन्द करना चाहिये और सिर्फ सृष्टिकर्ता ही की आराधना करनी चाहिये । नए नियम में भी ऐसे विशेष वचन हैं जो मूर्ती पूजा को दण्डणीय बताते हैं।

५. १ कुरुन्थियों १०:१४ – मूर्ती पूजा से बचे (दूर भागो) रहो । क्या आप इसके लिये तैयार हो ? जब आप एक जंगली जानवर को देखते हो तो क्या करते हो ? आप वहाँ से बहुत दूर भाग जाते हो और फिर लौटकर वहाँ नहीं जाते।

६. प्रकाशितवाक्य २१:८ – यहाँ मूर्ती पूजकों को हत्यारों और व्यभिचारियों के साथ जोडा गया है । उनका अन्त नरक है।

७. यूहन्ना ४:२४ – यहाँ यीशु खुद कहते हैं कि परमेश्वर आत्मा है। इसका अर्थ है परमेश्वर का कोई रुप नहीं है। इसलिये हमें उसे किसी भी रुप में नही पूजना चाहिये क्योंकि उसका कोई रुप नहीं है।

निष्कर्श :

आज आपने क्या सीखा ? इस पाठके बारे में आप क्या महसूस करते हो ? क्या यह पाठ परमेश्वर की सच्चाई जानने में आपकी मदद् करता है ? क्या आप और अधिक जानना चाहते हैं ? परमेश्वर को खुश करने के लिऐ हमें पूरी तरह मूर्ती पूजा को छोड देना चाहिये । क्या आप यह करने के लिये तैयार हो ?

अध्याय –३

यीशु परमेश्वर हैं

उपयोग किये गए वचन	
१. कुलुस्सियों २:९	२. मरकुस ४:३५–४१
३. मरकुस १:४०–४२	४. लुका ७:३६–३९,४८–५०
५. १ युहन्ना ३:५	६. व्यवस्थाविवरण ५:७
७. प्रेरित ४:१२	८. यूहन्ना १४:६

यह दूसरा पाठ है जो गैर मसिहियों के साथ करना है। मैं आपसे कुछ प्रश्न पूच्छना चाहता हूँ। क्या आपने यीशू के बारे में सुना है ? आप यीशु के बारे में क्या जानते हो ?

मैं आपको यीशु के बारे में सिखाने की अनुमती चाहता हूँ। यह आपको यीशु कौन है यह जानने में मद्द करेगा।

१. कुलुस्सियों २:९ – यह वचन कहता है कि यीशु में सदेह ईश्वरत्व है। वो सभी बातें जो आप परमेश्वर में देखते हो यीशु में भी देख सकते हो। इसका अर्थ है यीशु परमेश्वर हैं।

इसका अर्थ है यीशु में वो सभी गुण होने चाहिये जो स्वर्ग के परमेश्वर में होने चाहिये। ये हम इन आगे के ३ परिछेदों में देखने जा रहे हैं।

२. मरकुस ४:३५–४१– नि. यीशु में आन्धी और पानी को नियंत्रण में रखने की शक्ति है।

प्र. प्राकृतिक शक्तियों पर नियंत्रण करने की शक्ति किसमें है ? परमेश्वर में। इसका अर्थ है यीशु परमेश्वर हैं। वह सर्व शक्तिमान हैं।

३. मरकुस १:४०–४२ – यीशु किसी भी बिमारी को ठीक कर सकते हैं। उनमें किसी भी व्यक्ती को स्वस्थ करने की शक्ति है। यीशु परमेश्वर की तरह दया से भरपूर हैं। उन्होंने छोटे से छोटे जो कुछ भी नही उनसे प्रेम किया। उन्होंने कोडी को छुआ। गरीब पर उन्होंने करुणा दिखायी।

४. लुका ७:३६–३९, ४८–५० – यह स्त्री एक बडी ही पापीन स्त्री थी क्योंकि सारा शहर शायद उसके पापों के बारे में जानता था फिर भी यीशु ने इस स्त्री के प्रति प्रेम और करुणा दिखाया। यीशु पापियों से प्रेम करते हैं। पापों को कौन क्षमा कर सकता है ? सिर्फ परमेश्वर ही। यीशु ने परमेश्वर की तरह इस स्त्री को क्षमा किया। यीशु कौन हैं ? यीशु परमेश्वर हैं। उन्होंने इस स्त्री के पापों को क्षमा किया। वो आपके सारे पापों को क्षमा कर सकते हैं।

५. १ यूहन्ना ३:५ – यीशु हमारे पापों को क्षमा करने के लिये आए। आपके और मेरे पाप। क्या यीशु ने अपने जीवन में कोई पाप किया था ? नही। हम किसे निष्पाप पाते हैं ? सिर्फ परमेश्वर को फिर यीशु कौन हैं ? मेरा विश्वास है कि वे परमेश्वर हैं। सिर्फ वो ही जिसने पाप ना किया हो दूसरों को पाप से बचा सकता हैं। परमेश्वर होने के लिये उसे निष्पाप होना चाहिये। यदि एक भी पाप उसने किया हो तो वह परमेश्वर नहीं बन सकता। दूसरे देवताओं के बारे में क्या ? क्या वे निष्पाप हैं ? क्या वे सिध्द हैं ? यदि वे सिध्द नहीं हैं तो क्या वे परमेश्वर हो सकते हैं ? दूसरे देवताओं के बारे में बताएँ – चाहे उन्होंने बहोत अच्छे काम किये होंगे पर परमेश्वर बनने के लिये ये काफी नहीं है। क्योंकि वे सिध्द नहीं हैं इसलिये उन्हें परमेश्वर नहीं कहा जा सकता।

६. व्यवस्थाविवरण ५:७ – परमेश्वर हमें आज्ञा देते हैं कि हमें केवल एक ही परमेश्वर की उपासना करनी चाहिये, क्योंकि पवित्र शास्त्र में केवल एक ही परमेश्वर हैं अनेक नही।

७. प्रेरित ४:१२ – यीशु ही केवल एक नाम है जिससे सारे संसार को उध्दार मिल सकता है। इसके अलावा और कोई नाम नही। सिर्फ यीशु के नाम से ही आप उध्दार पा सकते हैं, और आप स्वर्ग जाएँगे।

८. यूहन्ना १४:६ - यीशु कहते हैं कि **मार्ग वही हैं, वही एक मार्ग** । इसका अर्थ है स्वर्ग जाने का और कोई रास्ता नहीं । आप कोशिश कर सकते हैं पर कोई और मार्ग नही है। यीशु **सच** है एक पूर्ण **सच** । सभी धर्मों में कुछ सच्चाईयाँ हैं, पर पूरी सच्चाई आप यीशु में पाएँगे ।

यीशु **जीवन** है। सिर्फ येशु के द्वारा ही हम अनन्त जीवन पा सकते हैं।

निष्कर्श : आज आपने यीशु के बारे में क्या सीखा ? यीशु कौन हैं ? देवताओं के बारे में क्या ? क्या आप यीशु के पीच्छे चलना चाहते हैं ? यदि हाँ, तो आपको सिर्फ उन्हीं के पीच्छे चलना होगा । आप एक ही समय में यीशु और दूसरे देवताओं की उपासना नहीं कर सकते । जो लोग यीशु के पीच्छे चलते हैं उन्हे लोग किस नाम से पुकारते हैं ? मसीही । यदि आप यीशु के पीच्छे चलोगे तो लोग आपको किस नाम से पुकारेंगे ? मसीही । आपको इसमें कोई दिक्कत नही होनी चाहिये ।

अध्याय -४

यीशु के शिक्षण

(गैर मसीहियों के लिये अति आवश्यक)

उपयोग किये गए वचन

१. युहन्ना ३:१-५	२. युहन्ना ३:१६-१८	३. युहन्ना ५:५-६
४. युहन्ना ६:३५	५. युहन्ना ८:१२	६. युहन्ना ८:४६
७. युहन्ना ११:२५	८. युहन्ना १२:४८	९. यूहन्ना २०:२९
१०. युहन्ना १४:६		

यह पाठ पूर्णतः यूहन्ना की किताब से है। यह पाठ उनकी मद्द करेगा कि वे यीशु के शिक्षण और वचनों को जानें और यीशु के लिये एक दृढ संकल्प पाएँ ।

१. युहन्ना ३:१-५ - यहाँ हम देखते हैं कि यीशु ने शिक्षकों को भी सिखाया । यीशु ने कहा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये तुम्हें नऐ सिरे से जन्म लेना है। जिसका अर्थ है तुम्हे अपना जीवन फिर से एक नए सिरे से शुरु करना है। क्या आप नए सिरे से जन्म लेना चाहते हैं ? तो यीशु अपको एक मौका देता है कि आप अपना जीवन फिर से एक नए सिरे से शुरु करें ।

२. युहन्ना ३:१६-१८ - परमेश्वर ने सिर्फ मसीहियों से ही नही परन्तु सारे जगत से प्रेम किया । यीशु सभी लोगों के लिये आए । कई लोग ये विश्वास करते हैं कि यीशु मसीहियों के ही परमेश्वर हैं। परन्तु पवित्र शास्त्र यहाँ कहता है।

यीशु इस संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिये आए । परमेश्वर नहीं चाहते कि किसी का नाश हो । वो चाहते हैं कि हर जाती हर धर्म और हर प्रकार के लोग उध्दार पाएँ । वे तभी उध्दार पाएँगे जब वे यीशु पर विश्वास लाएँगे ।

३. युहन्ना ५:५-६ – यह मनुष्य ३८ वर्षों से बिमारी में पडा था । हम पाप के कारण धार्मिकता में कई वर्षों से बिमार हैं। यदि यीशु यहाँ आए और आपसे मिले तो पूच्छेंगे ''क्या आप चंगा होना चाहते हैं ? ''क्या आप बदलना चाहते हैं ? तो आप क्या कहेंगे ?

४. युहन्ना ६:३५ – जो यीशु के पास आते हैं वह उनका पोषण करता है। यीशु ने अपने आपको धार्मिकता के पोषण का स्त्रोत बताया है।

५. युहन्ना ८:१२ – यीशु ज्योति हैं। यदि आप यीशु के पीच्छे चलते हो तो अन्धकार से पूरी तरह बाहर आना होगा । आज आप ज्योति में हो या अन्धकार में ? यदि आप अन्धकार में हो तो यीशु आपको ज्योति में ला सकते हैं ।

६. युहन्ना ८:४६ – यीशु निष्पाप थे । उन्होंने खुले आम लोगों को चुनौती दी कि उन्हें गुन्हेगार साबित करें ।

७. युहन्ना ११:२५ – यीशु पुनरुत्थान हैं। वो हमें अनन्त जीवन का वचन दे रहे हैं। यीशु यहाँ पुनर्जन्म की बात नही कर रहे हैं। क्योंकि मृत्यु के बाद सिर्फ न्याय का इन्तजार करना है पुनर्जन्म का नहीं – **इब्रानियों ९ : २७** । यीशु हमें पुनरुत्थान की आशा देते हैं। क्योंकि वे स्वयं मुर्दों में से जिलाए गए । यीशु अपने पीच्छे चलने वाले सभी लोगों को अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा देते हैं।

८. **युहन्ना १२:४८** - जो शब्द येशु ने कहे उनके द्वारा अन्तिम दिन (न्याय के दिन) में हमारा न्याय होगा । हमें उनके वचन पढने और सीखने में ही गम्भीर नहीं होना है परन्तु उसे मानने में भी गम्भीर होना है।

९. युहन्ना २०:२९ – हममें से किसी ने यीशु को नहीं देखा । यदि हम उसपर विश्वास लाएँगे तो हम आशीष पाएँगे । तो अपना भरोसा यीशु पर रखो । अपना विश्वास उसमें लाओ ।

१०. युहन्ना १४:६ – यीशु कह रहे हैं वे ही **मार्ग** हैं । **एकमात्र मार्ग** । इका अर्थ है **स्वर्ग** के लिये दूसरा कोई रास्ता नहीं है। आप प्रयत्न कर सकते हैं पर दूसरा कोई रास्ता नहीं है। यीशु **सत्य** हैं। पूर्ण **सच** । हर धर्म में कुछ सच्चाई है, लेकिन पूरी सच्चाई आप यीशु में पाएँगे । यीशु **जीवन** हैं सिर्फ यीशु के द्वारा ही हम अनन्त जीवन पा सकते हैं।

निष्कर्श : नि . यीशु के समान और कोई नहीं है। यीशु ही **एक मार्ग है**।
प्र. क्या आप विश्वास करते हो कि यीशु ही एक मार्ग है ? क्या आप यीशु के पीछे चलना चाहते हो ?

अध्याय –५

वचन

उपयोग किये गए वचन

१.२ तिमुथियुस ३:१६–१७	२. इब्रानियों ४:१२–१३	
३. युहन्ना ८:३१–३२	४. मत्ती १५:१–९	
५.१ तिमुथियुस ४:१६	६. प्रेरित१७:१०–१२	७. मत्ती ४:४

उद्देश्य : विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है। (प्रेरित १०:१७) । इस तरह परमेश्वर के वचनों के बारे में सिखाने का मकसद है कि उस खोजी का विश्वास यीशु में बडे । (हमारी भावनाओं, अनुभवों, हमसे बडों के विचारों या पारिवारीक रिती रीवाजों के विरुध्द) पवित्र शास्त्र ही एक मात्र सही स्तर है ऐसा मानकर हमें चलना चाहिये । और यदि मसीह के सही उध्दार को जनना है तो इसी स्तर के आधार पर हमें जीवन बीताना है।

१.२ तिमुथियुस ३:१६–१७ – अ. सभी वचन परमेश्वर द्वारा प्रेरित हैं।

ब. हमारे जीवन में इनका उपयोग करना चाहिये ।

२. इब्रानियों ४:१२–१३ – अ. वचन संबन्ध स्थापित करता है। (जीवित आर प्रबल है).

ब. वचन काटता (दुःख पहूँचाता) है – जैसे एक डॉक्टर की छुरी ।

क. इससे कटना अच्छा है – यह पाप को हमारे जीवन से काटता है।

३. युहन्ना ८:३१–३२ – अ. बौध्दिक ज्ञान काफी नही है । ना ही हम हमारी भावनाओं में बहकर चल सकते हैं।

ब. सभी को – मसीही (शिष्य) बबने के लिये यीशु के शिक्षण को थामे रहना और उनपर चलना आवश्यक है।

४. मत्ती १५:१–९ – अ. रीती रीवाजों के द्वारा की गई आराधना (जो परमेश्वर के वचनों की जगह ले) वह आराधना व्यर्थ है ।

ब. यीशु हमें सावधान करते हैं कि हमारे रीती रिवाजों के लिये हमें परमेश्वर के वचनों को नहीं टालना चाहिये ।

५.१ तिमुथियुस ४:१६ – अ. अपने जीवन और सिध्दान्त की चौकसी रख – क्योंकि ये एक एक दूसरे से अलग नही हो सकते ।

ब. क्या अधिक महत्वपूर्ण है आपका जीवन या सिध्दान्त ? एक हवाई जहाज की तरह – कौनसा पंख अधिक महत्वपूर्ण है ?

६. प्रेरित १७:१०–१२ – अ. यहाँ पर उन बिरियों का उदाहरण है जिन्होंने ना ही पूरे उत्साह से वचन ग्रहण किया पर हरदिन उन वचनों को टटोलकर भी देखा कि ये जान लें कि जो उन्होंने सुना वह सही है या नही ?

ब. खोजी को प्रोत्साहन दें कि वह हर दिन वचन को पढने और उनपर मनन करने की आदत डाले ।

७. मत्ती ४:४ –अ. पवित्र शास्त्र क्यों पढें ? क्योंकि यीशु मसीह ने कहा कि ''मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परंन्तु हर एक वचन जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहता है ।''

ब. परन्तु जिस तरह जिवित रहने के लिये हमें भोजन की जरुरत होती है उसी तरह विश्वास में कायम रहने के लिये वचनों की जरुरत होती है।

दूसरे उपयोगी वचन

१. याकूब १:२२–२५ २. मत्ती ७:१५–२०, २४–२७

३. रोमियो १०:१७ भ. सं. १९:७–११, भ सं. :१११–११, १०५

आगे की शिक्षा के लिये वचन

भविष्यवाणी	पूर्ण हुए	भविष्यवाणी	पूर्ण हुए
उत्पत्ति ४९:१०	मत्ती १:१–१७	यशायाह ४२:१–४	मत्ती १२:१५
यशायाह ७:१४	मत्ती १:२२–२३	भ.सं. ७८:२	मत्ती १३:३४–३५
मीका ५:२	मत्ती २:५	मीका ७:६	मत्ती १०:३५–३६
होशे ११:१	मत्ती २:१५	मलाकी ३:१	मत्ती ११:१०
यीर्मयाह ३१:१५	मत्ती २:१७–१८	यशायाह ६:९–१०	मत्ती १३:१३–१५
यशायाह ४०:३	मत्ती ३:३	भ.सं. ८:३	मत्ती २१:१६
यशायाह ९:१–२	मत्ती ४:१३–१६	जकर्याह ९:९	मत्ती २१:१–५
यशायाह ५३:४	मत्ती ८:१६–१७	जकर्याह १३:७	मत्ती २७:३१

अध्याय –६

पाप

उपयोग किये गए वचन

१. यशायाह ५९:१–२	२. रोमियों ३:२३	३. रोमियों ६:२३
४. गलतियों ५:१९–२१	५. मरकुस ७:२१–२३	६. याकूब ४:१७
७. याकूब ५:१६	८.१ यूहन्ना १:९	

उद्देश्य : जबकि हम ये चाहते हैं कि हर एक खोजी अनुग्रह के द्वारा उध्दार पाए, पर यदि हम पाप को ना पहचानें तो कोई अनुग्रह नहीं है । हाँ सभी ने पाप किया है (रोमियों ३:२३) इसीलिये हम सभी को परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है । (रोमियों ६:२३) । इस तरह हमारे इस पाठ का यह मक्सद है कि परमेश्वर के खोजी अपने आप को उस नजर से देखें जिस नजर से परमेश्वर उनको देखते हैं पूरी तरह पापी और हमारे परमेश्वर से दूर । यह पहचान क्षमा और पश्चाताप की चाहत लाता है।

१. यशायाह ५८:१–२ – नि. हमारे पाप हमे परमेश्वर से अलग करते हैं । जब हम पाप करते हैं तो वो ऐसा होता है मानो हम हमारे और परमेश्वर के बीच एक दिवार खडी कर रहे हों । तो यह परमेश्वर का दोष नहीं है। हमें इस पाप की दिवार को गिराकर परमेश्वर के पास आना है। पाप की दिवार का चित्र बनाकर समझाओ ।

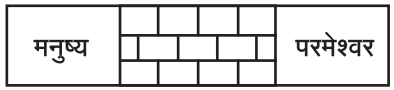

पाप की दिवार

२. रोमिओं ३:२३ – नि. कितने लोगों ने पाप किया ? सभी ने । नि. तो हम सभी को हमारे पापों की क्षमा चाहिये । एक झूठ आपने बोला आप झूठे बन गए तो एक पाप आपने किया आप पापी बन गए । एक पापी बनने के लिये आपको बहुत सारे पाप करने जरुरी नही है। तो हम सभी पापी हैं। हम दूसरों से अलग नही हैं । हम सभी को क्षमा की जरुरत है।

नि. जब हम अपनी तुलना दुसरों से करते हैं हमें कैसा महसूस होता है ?

हमे लगता है कि हम दूसरोंसे बहतर हैं पर जब हम अपनी तुलना परमेश्वर से

करते हैं तो हम अपने आपको बहुत छोटा पाते हैं । हम चाहे कितने भी अच्छे क्यों ना हों हम परमेश्वर की महीमा तक नहीं पहुँच सकते । हम सभी कमजोर / छोटे पड जाते हैं।

३. रोमियों ६:२३ – नि. हमारे पापों के कारण हमें मौत मिलनी जरुरी है। (धार्मिक मृत्यु शारिरीक नही) । जिसका अर्थ है परमेश्वर से हमेशा के लिये अलग और हमें नर्क में डाला जाए ।

नि. परन्तु यीशु मसीह के द्वारा हम इस पाप की दीवार को तोड सकते हैं। वो हमें अनन्त जीवन दे सकते हैं । वो हमारे सारे पाप क्षमा कर सकते हैं। वो कौनसे पाप हैं जिनके बारे में पवित्र शास्त्र बात करता है ? भूल से किये (याकूब ४:१७) और जानते हुएभी किये गए पाप ।

४. गलतियों ५:१९–२१ – जानते हुए भी किये जानेवाले पाप

व्यभिचार – लैंगिक पाप

लालसा लडकियों को छेडना – गन्दे बातें कहना, बस में स्त्रीयों के पीच्छे खडा रहना, जानबूझकर उनको छूना या धक्का देना ।

गन्दे चित्र देखना – गन्दी फिल्में, इन्टरनेट, गन्दी किताबें, तस्वीर आदि हस्तमैथून (मूठमारना) करना ।

विवाह से बाहर शरीर संबन्ध – पडौसी के साथ बॉयफ्रेन्ड / गर्ल फ्रेन्ड के साथ, वैश्याओं के पास जाना आदि । निकट संबन्धी के साथ व्यभिचार, परीवार के सदस्य के साथ, चुलतभाई / बहन के साथ, मौसी, मौसा, रिश्तेदार, भाई या बहन के साथ।

समलैंगिक सम्बन्ध – समान लिंग वालों के साथ शरीर सम्बन्ध एक दूसरे के गुप्त अंगो को छूना, एक दूसरे से हस्तमैथून करवाना, मुहँ का उपयोग और पृष्ठभागों का उपयोग करना ।

बच्च्चों का दुरुपयोग – बच्चों के साथ शरीर सम्बन्ध, खुद की लैंगीक आनन्द के लिये बच्चों का उपयोग, बच्चों को जाँघोंपर बैठाना या हाथों से लैंगीक आनन्द उठाना।

गन्दे काम – अपने बारे में, अपने परिवार और अपनी पीछली जीन्दगी के बारे में झूठ बोलना, परीक्षा में नकल करना, झूठे प्रमाण पत्र बनाना, गलत भाषा का उपयोग, चोरी ।

लुचपन – आसक्त, खुद को प्रसन्न करना, कुछभी जरुरत से ज्यादा करना अधिक सोना, आलस, अधिक खाना, कुछभी जरुरत से ज्यादा करना लुचपन है।

मूर्तीपूजा – मूर्तीयों, तस्वीरों, चीत्रों, पत्थरों, गुरुओंकी पूजा करना या किसी भी व्यक्ति या वस्तु को परमेश्वर से उँचा जानना ।

टोना – काला जादू, परमेश्वर के बजाए दूसरी शक्तियों में विश्वास करना । भविष्य बताने वालों, भविष्य राशी पर विश्वास करना । परमेश्वर नहीं पर हमारी हाथ की रेखाएं और राशी हमारे जीवन का नियंत्रण करते हैं – यह विश्वास करना पाप है।

बैर – क्षमा ना करना, दुश्मनी, जायदाद के लिये झगडा, किसी ने आपको चोट पहुँचाया उससे बैर करना भी गलत है।

झगडा – रीश्तों में दरार । क्या आपके जीवन में, विवाह में कुछ ऐसे झगडे हैं जो अब तक सुलझाए ना गए हों ?

ईर्ष्या – अपना हक जमाना

क्रोध – इतना गुस्सा होना कि आप गालियाँ देने लगो, चीजें उठाकर फेंकना, मारना, दरवाजा पटकना ।

स्वार्थी (विरोध) – सिर्फ खुद के बारे में चिन्तीत, दूसरों की कोई चिन्ता नही, सिर्फ खुद के भविष्य और काम की चिन्ता कि कैसे उसे पाएँ ।

फूट – झगडे, असहमती ।

विधर्म (दलबन्दी) – असहमत लोगों का दल बनाना, किसी दलमेंही विरोधी दल बनाना ।

डाह – दूसरों की दौलत और उपलब्धियों का लालच, दूसरों की बढोतरी से नाखुश, परमेश्वर ने जो कुछ दिया उसमें सन्तुष्ट ना होना।

मतवालापन – हद से ज्यादा शराब पीना, ड्रग्ज लेना, तम्बाकू खाना, सीगारेट पीना, गुटखा खाना।

लीलाक्रीडा – गन्दी पार्टियाँ, एक गुट में, कुछभी बुरा करना ।

५. मरकुस ७:२१-२३ – नि. पाप हमारे भीतर से याने हमारे मन से उत्पन्न होता है। तो हमारे पाप के लिये कौन जिम्मेदार है ? हम।

प्र. क्या हम हमारे पापों का दोष दूसरों पर या परीस्थितियों पर लगा सकते हैं ? नहीं । हमारे सभी पापों की जिम्मेदारी हमे खुद लेना है। हाँ गलत करने के लिये दूसरे लोग जरुर हमें उकसाएँगे पर गलत करना या सही करना पूरी तरह हमारे नियंत्रण में है।

७. याकूब ५:१६ और यूहन्ना १:९ – नि. ये दोनों ही वचन पाप कबूली के बारे में बात करते हैं। वो परमेश्वर ही हैं जो हमारे पापों को क्षमा करते हैं।

- तो हमें हमारे विशेष पापों को परमेश्वर के सामने कबुल (स्वीकार / मानना) करना चाहिये । **(भ.सं. ३२:१-५)**
- वचन हमें निर्देश देते हैं कि हम हमारे पाप दूसरे भाई / बहनों के सामने खुली तरह से कबुल करें ताकि धार्मिक सलाह और मध्यस्त होकर प्रार्थना कर सकें ।
- इसका यह भी अर्थ होगा कि हम उस व्यक्ति से जिसके खिलाफ हमने पाप किया है उससे पाप कबुल (मानें / क्षमा माँगे) करें ।

सुझाव – यदि परमेश्वर का खोजी चाहे तो उसे प्रोत्साहन करें कि वह अपने विषेश पापों की सूची बनाएँ । जितना भी उन्हें याद आए उतना ताकि परमेश्वर और लोगों के खिलाफ किये गए पापों को वे पहचान सकें । या हम उन्हें ये भी सुझाव दे सकते हैं कि वे अपने पिछले पापों की कबुली में परमेश्वर को एक पत्र लिखें । हमें उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिये कि ये सूची पत्र वो अगले पाठ के समय साथ लाएँ।

निष्कर्श : अपने विशेष पाप कबुल करने में आपको कैसा महसूस होता है ? इससे पहले अपने जीवन के बारे में क्या आपने किसी से खुलकर बात की है ? हम हमारे विशेष पापों को खोजी के सामने बताकर कबुली का एक उदाहरण रख सकते हैं।

दूसरे उपयोगी वचन

१) भ. सं. ३२:१-५ २) नीतिवचन २८:१३ ३) यूहन्ना ३:१९-२१
४) प्रेरित ३:१९ ५) २ तिमुथियुस ३:१-५
६) इब्रानियों ४:१३ ७) १ यूहन्ना १:५-१०

अध्याय –७

क्रूस

उपयोग किये गए वचन

१. मरकुस १४:३२–६५ २) मरकुस १५:१–२०
३) लूका २३:३२–३४ ४) मरकुस १५:३७–५७
५) १ पतरस २:२१–२५ ६) २ कुरुन्थियों ५:१४–१५

सुझाव : इस पाठ के सिखाने से पहले ''पॅशन ऑफ क्राईस्ट'' ये फिल्म दिखाएँ ।

उद्देश्य : ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उसपर विश्वास करे वह नाश ना हो परन्तु अनन्त जीवन पाए । परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उध्दार पाए । (यूहन्ना ३:१६-१७)

यहाँ सुसमाचार का प्रचार अपनी ऊँचाईयों को छूता है । हम अनुग्रह के द्वारा बचाए गए हैं । हम यीशु के प्रेम भरे बलीदान से बचाए गए हैं। इस बात का ध्यान रखें की खोजी को अनुग्रहकी जरुरत है इसबात का एहसास हो और अनुग्रह का यह पाठ असरदार होगा । खोजी को यह जानना भी महत्वपुर्ण है कि यीशु के मृत्यु का जिम्मेदार वो भी है। वैयक्तिक जिम्मेदारी का बढावा आगे चलकर यीशु के वैयक्तिक प्रेम और क्षमा के प्रति महान आदर और आनन्द उत्पन्न करेगा । यह एक गम्भीर पाठ है जहाँ हम क्रूस पर जाते हुए यीशु के शारीरिक, भावनात्मक और धार्मिंक दुःखों पर एक नजर डालेंगे । आओ प्रार्थना करें ।

१. मरकुस १४:३२-४२

प्र. इस समय यीशु कैसा महसूस कर रहे थे ? (अत्यन्त विचलित दुःखी और दुःख से इतने व्याकुल कि जैसे मौत बिल्कूल पास हो)
प्र. जैसे यीशु ने प्रार्थना शुरु की तब क्या वे क्रूस पर जाना चाहते थे ?
(नहीं) । प्रार्थना के अन्त में यीशु का स्वभाव कैसा था । (व.४२) ?

(वह मरने के लिये तैयार था ।) ठीक इसी तरह आपको भी अपने संघर्षों पर काबू पाने के लिये उस वक्त तक प्रार्थना करना चाहिये जब तक आपका मन ना बदल जाए ।
प्र. क्या कभी जब आपको अपने मित्र की जरुरत थी तभी वो आपके पास नही था ऐसा आपके साथ हुआ है ? अपने बारे में बताएँ ।
प्र. क्या आपको पता हैं यीशु ये सब क्यों कर रहे थे ? (क्योंकि वो हमसे प्रेम करते हैं । हमारे पापों, हमारे झूठ, हमारे घमण्ड और हमारे स्वार्थ के कारण ।)

२. मरकुस १४:४३-५० –

प्र. यहुदा ने यीशु को धोका दिया । क्या आपको कभी किसीने धोका दिया ? अपने विचार बाँटो।
प्र. यदि यीशु चाहते तो यहाँ क्या कर सकते थे ? (१२००० स्वर्गदूतों को भेजकर उनका नाश कर सकते थे (मत्ती २६:५३)
प्र. जब यीशु को गिरफ्तार किया गया तब सभी शिष्यों ने क्या किया ? (व. ५०) वे सभी उसे छोडकर भाग गए)
प्र. क्या आपने कभी अपने आपको अकेला महसूस किया, जैसे कि संसार में किसी को आपकी परवाह ना हो ? अपने बारे में बताएँ ।
प्र. क्या आपको पता है ये सब यीशु किसलिये कर रहे थे ? (क्योंकि वो हम से प्रेम करते हैं । हमारे पापों, हमारे झूठ, हमारे घमण्ड और हमारे आलसपन के कारण)

३. मरकुस १४:५३-६५

प्र. यहाँ पर यीशु पर मुकद्दमा चलाया गया । यह किस प्रकार का मुकद्दमा था ?
(एक गलत मुकद्दमा)
प्र. क्या आप पर कभी अन्याय किया गया ? बताएँ – कि हम कैसी प्रतिक्रिया करते हैं ?

प्र. पिछले तीन वर्षों में यीशु ने जितने भी लोगों को चंगा किया था क्या उनमें से कोई इस मुकद्दमें में यीशु के बचाव के लिये आया ?
प्र. क्या आपने कभी ऐसा महसूस किया कि आपके किये अच्छे कामों को किसी ने नही सराहा किसी ने प्रशंसा नहीं की ? आप बताएँ.
प्र. उन्होंने यीशु के आँखों. पर पट्टी बान्धी, उसका मजाक उडाया उसपर थूँका और उसे मारा । क्या कभी आप पर किसी ने थूँका ? क्या आपको कभी मारा गया ?
प्र. क्या आपको पता है कि यह सब यीशु क्यों कर रहे थे ? (क्योंकि वे हमसे प्रेम करते हैं । हमारे पापों, हमारे व्यभिचार, घमण्ड और गुस्से के कारण)
प्र. आगे उन्होंने पतरस से पूच्छा कि क्या वो यीशु को जानता है ? तीन बार उसने यीशु का इन्कार किया । लूका २२:५४-६२ में पवित्र शास्त्र कहता है कि यीशु इस बात को जानते थे, और उन्होंने सीधे पतरस की ओर देखा। फिर पतरस बाहर चला गया और फूट फूट कर रोने लगा ।
प्र. क्या आपने कभी किसी को आपके पीठ पीच्छे आपके ही बारे में बुरी बातें कहते सुना हैं ? आपको कैसा महसूस हुआ ? आप बताएँ.
प्र. क्या आप जानते हैं यीशु ये सब क्यों कर रहे थे ? (क्योंकि वो हमसे प्रेम करते हैं । हमारे पापों, हमारे झूठ, हमारे मतवालेपन और हमारी वासना के कारण)

४. मरकुस १५:१-५

नि. यीशु सारी रात जागे थे, उनको मारा गया उनपर थूँका गया था और अब वो एक और मुकद्दमो में खडे थे ।
प्र. यीशु की तुलना एक खुनी (बरअब्बा) के साथ की गई । उस भीड से उन दोनों में से एक का चुनाव करने को कहा । आपको क्या लगता है यीशु को कैसा महसूस हुआ होगा ?
प्र. पीलातुस न्यायाधिश की कुर्सी पर बैठा था । यीशु के बारे में उसे कुछ निर्णय लेना था । क्या आपको लगता है कि वह यीशु को पसन्द करता था ?

प्र. पीलातुस ने भीड को समझाना चाहा (''इसने क्या बुराई की है ?'') क्या भीड को उसकी ये बात पसन्द आई ? (नहीं वे और जोर से चिलाने लगे)
प्र. जब लोग ये देखते हैं कि उनकी हार हो रही है तो उस वक्त उनकी प्रतिक्रिया क्या होती है ? (चीलाना)
प्र. **मत्ती २७:२४** के अनुसार पीलातुस ने इस मामले से अपने हाथ धो लेना चाहा । क्या यह बात उसे बेगुनाह बनाती है ? नहीं । पीलातुस बेगुनाह बनना चाहता था पर उसकी कीमत चुकाना नहीं चाहता था । तो उसका यह निर्णय ना लेना यीशु के खिलाफ एक अनिर्णय बन गया ।
प्र. पवित्र शास्त्र कहता है कि यीशु को कोडे मारे गए । क्या आपको पता है कोडे कैसे मारे जाते हैं ? (वो आपके कपडे उतारते हैं। वो चमडे का एक हन्टर बनाते हैं जिसके सिरे पर हड्डी या काँच के टुकडे लगे होते हैं और उससे वो आपको बार-बार कोडे मारते हैं। खून बहने लगता है। दर्द असहनीय होता जाता है । और वो उस वक्त तक आपके पीठ पर कोडे बरसाते रहते हैं जब तक आपका पीठ खीमे की तरह छलनी ना हो जाए ।)
प्र. और हर बार जब कोडे पीठ पर पडते - क्या आप जानते हो कि क्यों यीशु इन सब बातों को सहने के लिये तैयार थे ? (क्योंकि वो हमसे प्रेम करते हैं। हमारे पापों, हमारे सिगरेट पीने और हमारे स्वार्थीपन के कारण ।)

५. मरकुस १५:१६-२० -

प्र. वे यीशु को ले गए और सारे सैनिक उनका मजाक उडा रहे थे । क्या आपने कभी ये देखा कि एक झुण्ड किसी व्यक्ति को चारों ओर से घेरकर उसके साथ गलत बर्ताव कर रहा है।
नि. उन्होंने यीशु के वस्त्र उतारे और उन्हें नए वस्त्र पहनाए । फिर उन्होंने काँटो का मुकुट बनाकर यीशु के सिर पर धस दिया । फिर उन्होंने उसके वस्त्र उतारे और उसे क्रूस पर चढाने के लिये ले गए । प्र. जब वे यीशु को मारने लगे तो उन काँटो क मुकुट का क्या हुआ ? (वह यीशु के सिर में और अन्दर धसता गया और उनके दर्द को और बढाता गया ।)
प्र. जब उन्होंने खींचकर यीशु के शरीर से वस्त्र निकाले तब यीशु के पीठ को कैसा महसूस हुआ होगा ? (बहुत ही दर्दनाक जैसे किसी घाव पर से बन्धी

पट्टी को खींच कर निकालना)
प्र. क्या आप जानते हैं ये सब यीशु क्यों कर रहे थे ? (क्योंकि वे हमसे प्रेम करते हैं । हमारे पापों, व्यभिचार और मतवालेपन के कारण ।)

६. लूका २३:३२-३४ – नि. उन्होंने यीशु के छलनी हुए पीठ पर क्रूस लादकर उन्हें उस क्रूस को ले चलने को कहा । फिर उन्होंने उनके कपडे उतारे और उनके कलाई (हाथों) और एडियों (पैरों) में कील ठोंके। फिर उन्हे नंगा क्रूस पर लटकाया गया । और सारा दिन वह उस क्रूस पर उपर नीचे होता रहा । उनका छिला हुआ पीठ क्रूस के साथ घिस रहा था । वह अत्यन्त पीडा में था ।
प्र. क्या आप जानते हैं जिसे क्रूस पर लटकाया जाता है उसकी मौत कैसी होती है ? (वे साँस नहीं ले पाते इसलिये कीलों का सहारा लेकर उन्हें अपने आपको उपर खींचना पडता है। लेकिन इस कारण असहनिय पीडा होती है, इसलिये वे फिर से अपने शरीर को नीचे छोड देते हैं। ये उस समय तक चलता रहता है जब तक उनकी शक्ति खत्म नही हो जाती और इसके बाद दम घुटकर वे दर्दनाक मौत मरते हैं ।
प्र. क्या आपको पता है यीशु ये सब क्यों कर रहे थें ? (क्योंकि वो हमसे प्रेम करते हैं। हमारे स्वार्थी स्वभाव के कारण, हमारे धुम्रपान और गुस्से के कारण ।)
प्र. जब आपका दिन बहुत ही बेकार जाता है, तब आपके मुँह से पहले शब्द क्या निकलते हैं। (गुस्से से भरे बुरे शब्द)
नि. आओ हम उन पहले शब्दों को देखें जो यीशु ने क्रूस पर कहे ।
प्र. वचन ३४ में यीशु ने क्या कहा ? (''हे पिता इन्हे क्षमा कर''....)
प्र. मौत साम्हने होते हुए भी यीशु को किसकी चिन्ता थी ? (वचन ३४)
प्र. क्रूस पर किसे मरना था यीशु को या हमें ?
प. प्र. यहाँ दो चोर थे । मत्ती २७:४४ के अनुसार दोनों ने ही यीशु को बेईज्जत किया, फिर भी यहाँ पर एक चोर ने दूसरे चोर की ओर देखा और यीशु की और पश्चातापी हृदय से मुडा । और यीशु ने उसे क्षमा किया ।

यहाँ सचमुच हम परमेश्वर के मन को जान सकते हैं। परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं। यीशु चाहते तो उस चोर को नर्क भेज सकते थे पर उन्होंने ऐसा नहीं किया । और आज आप भी क्षमा पा सकते हैं । यीशु शारीरिक रुपसे यहाँ उपस्थित नही हैं परन्तु उन्होंने हमें पवित्र शास्त्र दिया है जो हमें उध्दार का मार्ग दिखा सकता है।

७. मरकुस १५:३७-५७ – नि. यहाँ हम देखते हैं कि यीशु अपने प्राण त्याग रहे हैं । वे पीडा से चिलाते हैं, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड दिया ?''
प्र. पवित्र शास्त्र कहता है शुरु से ही परमेश्वर येशु के साथ थे । यहाँ पर येशु ये क्यों कहते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें छोड दिया ? (पाप के कारण) इसे बेहतर जानने के लिये आओ हम । पतरस में जाएँ।

८. १ पतरस २:२४ – जब यीशु क्रूस पर मरे तब उन्होंने क्या ढोया ? (हमारे पाप)
प्र. जब आप पाप करते हो तब आपको कैसा लगता है ? (दोषी, बुरा, दुःख)
नि. कल्पना कीजिये कि आप अपने सारे पापों का दोष एक ही समय महसूस कर रहे हो । फिर कल्पना कीजिये सारे दूसरे लोगों के पापों का एहसास । सभी बलात्कार, सारे झूठ, सभी खून, सारे अन्याय । यीशु ने हमारे सारे पापों को जो हमने सारी जीन्दगी किया उसका दोष, उसका दर्द और उसकी पीडा को महसूस किया । उन्हें ऐसा लगा मानो ये सब उन्हींने किया हो । और क्योंकि पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। **(यशायाह ५९:१-२, कुलुस्सियों १:२१)**, यीशु के क्रूस पर मरते समय परमेश्वर उनके साथ नही थे । वे अकेले ही मरे । हमारे पापों ने उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया ।
प्र. क्या आप जानते हैं ये सब यीशु क्यों कर रहे थे ? (क्योंकि वे हमसे प्रेम करते हैं। हमारे पापों, हमारे बुरे विचारों, धोका और गुस्से के कारण)
नि. एक कहानी है जो शायद क्रूस को और भलीभान्ती समझने में आपकी मद्द कर सकती है।

पिता - पुत्र का उदाहरण : परमेश्वर पिता और उनका पुत्र येशु नीचे संसार की ओर देख रहे थे । उन्होंने सभी लोगों पर नजर डाला । उन्होंने आपको और मुझे देखा । और येशु ने कहाँ हे पिता हम इनकी मदद् कैसे कर सकते है? मैं उनसे प्रेम करता हूँ ? उनके लिये मैं क्या कर सकता हूँ ?'' परमेश्वर ने कहा, ''पुत्र आप समझ नही रहे हो - वो हमारी तरह नही हैं'' परंतु यीशू ने कहा ''पिता मैं उनके लिये कुछ भी कर सकता हूँ जब तक आप मेरे साथ हो । ''परमेश्वर ने कहा,'' पुत्र तुम समझ नही रहे हो । उनको मदद् करने का सिर्फ एकही तरीका है कि तुम्हे खुद पृथ्वी पर जाना पडेगा । तुम्हे एक मनुष्य के समान जीना होगा, उसकी तरह खाना, गन्दा होना, थकना और बिमार पडना होगा । ''येशु ने कहा,'' हे पिता मैं उनसे प्रेम करता हूँ, जब तक आप मेरे साथ हो मैं उनके लिये कुछ भी कर सकता हूँ ।'' परमेश्वर ने कहा,'' बेटा तुम समझ नही रहे हो । लोग तुम्हारी हँसी उडाऐँगे और तुम्हे अस्वीकार करेंगे । तुम्हारा खुद का परिवार ये सोचेगा कि तुम पागल हो । तुम्हारे पीच्छे चलनेवाले अन्त में तुम्हारा साथ छोड देंगे और तुम अकेले रह जाओगे ।'' परन्तु यीशु ने कहा, ''हे पिता जब तक आप मेरे साथ हो - मैं ये करुंगा ।'' परमेश्वर ने कहॉ, ''बेटा तुम समझ नही रहे हो । लोग तुम पर गलत इल्जाम लगाएंगे । वो तुम्हे मारेंगे, तुम पर थुकेंगे और तुम्हे कोडे मारेंगे । वो तुम्हारे खून से लथपथ नंगे शरीर को क्रूस पर किलों से लटका देंगे और तुम मर जाओगे ।'' येशु ने कहा, ''जब तक आप मेरे साथ हो मैं कुछ भी करुंगा ।'' परन्तु परमेश्वर ने कहा, ''बेटा आप समझ नहीं रहे हो । जब आप उस असहनीह पीडा के साथ संसार के सारे पापों को अपने शरीर पर लेकर क्रूस पर लटक रहे होंगे । तब तुम्हे उनके दोष, उनकी शर्मनाक बातें, उनके दर्द का एहसास होगा, और उनके पाप तुम्हे मुझसे अलग कर देंगे । उस पल जब तुम्हे सबसे ज्यादा मेरे जरुरत होगी मैं तुम्हारे साथ **नही** रहुँगा ।'' और येशु ने कहा, '' पिताजी अब मै समझ गया । मै जाऊँगा ।''

प्र. क्या आपने देखा शीशु हमसे कितना प्रेम करते हैं । चिकित्सा सम्बन्धी जानकारी पढीये ।

९. १ पतरस २:२१-२५ -

प्र. वचन २१ के अनुसार यीशु को इतनी पीडा क्यों सहनी पडी ? (ताकी हमारे लिये एक उदाहरण छोडे सकें कि हम भी उनकी तरह बनें ।) अन्त तक वे पापरहित थे।

प्र. क्या आपको इस बात का एहसास है कि यीशु आपके लिये मरे ? क्या आप इस बात को समझ रहे हैं कि इस पृथ्वी पर सिर्फ आप अकेले भी होते तब भी यीशु आपके लिये अपने प्राण देते ?

प्र. एक मसीही बनने के लिये क्या आप दुःख उठाने को तैयार हैं? क्या आप विरोध को सहने की ताकत रखते हैं ?

प्र. वचन २४ के अनुसार यीशु ने हमारे पाप अपने उपर क्यों लिये ? (ताकि हम पापों के लिये मरकर, धार्मिकता के लिये जीयें ।)

१०. २ कुरुन्थियों ५:१४-१५ -

प्र. यीशु के पीच्छे पूर मनसे चलने के लिये पौलूस को किस बात ने प्रेरित किया ? (प्रेम)

प्र. क्या आप जानते हैं हमें इतना संकल्पित रहने में कौनसी बात प्रेरणा देती है ? **अपने बारे में बताएँ ।**

प्र. वचन १५ के अनुसार यीशु क्यों मरे ? (ताकि अब हम हमारे लिये नही पर यीशु के लिये जियें ।)

प्र. बहुतसे लोग किसके लिये जीते हैं ? (खुद के लिये)

प्र. अब तक आप किसके लिये जी रहे थे ? (मेरे खुद के लिये)

प्र. क्या आप समझ रहे हैं कि आपको गम्भीर क्यों होना है ?

प्र. अब जबकी आपको पता चला है कि किस तरह यीशु ने दुःख उठाया, आप कैसा महसूस कर रहे हो ?

चुनौती : अपना जीवन बदलने और यीशु के पीछे चलने के लिये पूरी तरह से गम्भीर हो जाओ ।....प्रेम में चलो, जैसे मसीहने भी तुमसे प्रेम किया और हमारे लिये अपने आपको बलिदान कर दिया... (इफिसियों ५:१-२)

दूसरे उपयोगी वचन

इफिसियों ५:१-२, यशायाह ५३

क्रूस पर चढाए जाने की एक चिकित्सक जानकारी :

फाँसी, बिजली के झटके से मौत, घुटने की कटोरियाँ निकालना, गैस चेम्बर जैसी सजाएँ डर पैदा करती हैं। आजकल ये सब बातें होती हैं, और इनकी पीडा और भयानयता का सोचकर हम काँम्पने लगते हैं। लेकिन हम आगे देखेंगे कि ये सभी कठीन परीक्षा यीशु के क्रूस पर जाने की सच्चाई के सामने फीके पड जाते हैं।

आज किसी को क्रूस पर नही चढाया जाता । हमारे लिये क्रूस आज एक अलंकार, जेवर, खिडकी के काँच पर बनी रंगीन तस्वीर भावनात्मक तस्वीर और एक शान्त मौत को दर्शाती मूर्तियाँ बस यही है। क्रूस पर चढाना किसी को मौत देने का एक तरीका था जिसे रोमियों ने और परिष्कृत करके (बढाकर) नित उपयोग की कला बना ली । इसे बहुत ध्यान से रचा गया ताकि इसमें अधिक से अधिक पीडा हो और धीरे-धीरे मौत आए । ये लोगों के सामने दिखाया जाता था ताकि दूसरे भावी गुन्हेगार गुन्हा करना छोड दें। यह एक भयानक मौत थी जिससे डर लगता था ।

खून का पसीना लूका २२:४४ - यीशु के बारे में बताता है। **वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हृदय वेदना से प्रार्थना करने लगा, और उसका पसीना मानो लोहू की बडी-बडी बून्दों की नाई भूमि पर गिर रहा था ।**

उनका पसीना असाधारण रुपसे तीव्र था क्यों कि उनकी भावनात्मक स्थीती असाधारण रुप से तीव्र थी । शरीर में पानी की कमी और थकान ने उन्हें और भी कमजोर कर दिया था ।

मारना :- इस परिस्थिती में यीशु को पहली बार शारीरिक चोट पहूँचाई गई । आँखों पर पट्टी बान्धकर चेहरे और सर पर घूँसे और थप्पड पडने लगे। ये पता ना चलने की वजह से कि घूँसे कहां से आएँगे यीशु बुरी तरह जख्मी हो गए थे, उनके चेहरे और आँखो पर शायद, काफी चोटें आई हों। झूठे इल्जाम की सजा पाने में शारीरिक असर को हमे कम नहीं आंकना चाहिये ।

इस बात पर गौर करें । कि जख्मी, कमजोर शरीर और थकावट से चूर यीशु इन सब बातों को सह रहे थे। शायद उन्हे जबरदस्त झटका लगा होगा ।

कोडे मारना

पिच्छले १२ घण्टों में यीशु को भावनात्मक पीडा गहरे मित्रों द्वारा अस्वीकारे जाने, एक क्रूर पिटाई, और पूरी रात जागने कें साथ - साथ कई मीलों तक अन्यायी बातों को सुनकर चलते रहना पडा । पलिश्ती राज्यों में सफर करके शारीरीक बल जरुर उन्होने जुटाया होगा पर इसके बावजूद भी वे इन कोडों की सजा सहने को किसी भी रीती तैयार ना थे । इसके नतीजे बद्दतर हो सकते हैं।

जिस व्यक्ति को कोडे मारे जाते हैं उसके कपडे उतारकर उसके दोनों हाथों को उसके सर के उपर खंभे से बान्ध दिया जाता था। फिर उसके पीछे और बाजू में खडे सिपाही उस व्यक्ति के कन्धे पीठ, नितम्ब (पिछवाडे) जाँघों और पैरों पर कोडे बरसाते । कोडे मारे जानेवाले हन्टर को कुछ इस तरह से बनवाया जाता कि उससे ये सजा इतनी नुकसान दायक बन जाती थी कि, गुन्हेगार अधमरा हो जाता था । हन्टर के छोर पर मोटे - मोटे चमडे के तसमे लगाए जाते और उनपर नुकीली कीलों से बने गेंद जैसी लोखंड या सीसे से बने दो गोलाकार बान्धे जाते थे । कभी - कभी इनकी जगह पर भेड के हड्डियों का उपयोग किया जाता था ।

जैसे ही कोडे मारना शुरु होता है चमडे के लम्बे लम्बे तसमे शरीर पर पहले छोटे दिखाई पडने वाले घाव करते हैं और फिर शरीर के भीतरी भाग के पतले पडदे को काटते हैं । और जब सिर्फ ये सुक्ष्म पडदा ही नही पर नस और शरीरके भितरी भाग की रक्त वाहिनियाँ भी कट जाती हैं तो रक्त तेजीसे बहने लगता है। हन्टर के छोर पर बंधे लोखंडके नूकीले गेंद पहले बडे, गहरे घाव करत है जो दुबारा कोडे पडने पर फट और अधिक खूल जाते है। और जब हंटर कोवापस खींचा जाता है तब भेड की हड्डियों के खुरदरे पन के कारण शरीर का मांस उसमें फँस कर फट जाता है। जब कोडे खत्म हो जाते हैं जब-तक पीठ छलनी हो जाता है और पूरा पीठ फटकर उससे खून बहने लगता है।

सुसमाचार के लेखकों के शब्द इस बात को साफ करते हैं कि यीशु पर बरसाए गए कोडे बहुत ही दर्दनाक थे । जब कोडे मारने के खुंटे से उनके हाथ खोले गए तो निश्चय ही वे (बेहोश) मुर्च्छित अवस्था में थे ।

ठट्ठा उडाना : यीशु को अपनी ताकत बटोरने का बिल्कुल भी समय नही दिया गया और उन्हें दूसरी परीक्षा में डाला गया । यीशु में खडे रहने की भी ताकत नहीं थी और उनका मजाक उडाने वाले सैनिकों ने उन्हें बैंजनी वस्त्र पहनाए, उनके सीर पर काँटों से बनाया हुआ मुकुट रखा और इस व्यंग्य लेख (ठट्ठे की कहानी) को पूरा करने के लिये उनके हाथो में राजा के राजदण्ड जैसा दिखने के लिये एक लकडी थमा दी । फिर उन्होंने यीशु पर थूँका और उनके सर पर रखे काँटों के मुकुट पर डण्डे मारे । जिससे वो लम्बे नुकीले काँटे यीशु के मस्तीष्क (सिर) के नाजुक नसों में धंस गए अैर उनमें से जोरों से खून बहने लगा, पर इससे भी भयंकर था यीशु के पीठ पर लगे घावों से चीपके उस बैंजनी वस्त्र को खींचकर फाडना जिससे उनके सारे घाव फिर ये खुल गए।

शारीरिक और भाविक रुपसे और अधिक कमजोर पड गए यीशु को आगे क्रूस पर चढाने के लिये ले गए ।

क्रूस पर चढाना

रोमियों के बनाए हुए वो लकडे का क्रूस इतना भारी होता था कि एक व्यक्ति के लिये उसे उठाकर चलना बहुत कठीन होता था । इसलिये क्रूस का आडा हिस्सा क्रूस पर चढनेवाले को अपने कन्धे पर उठाकर शहर से बाहर जहाँ क्रूस पर चढाया जाता वहाँ तक ले जाना पडता था (क्रूस का खडा हिस्सा जो बडा ही भारी होता था हमेशा वहीं गडा रहता था ।) यीशु इस भारी बोझ जिसका वजन करीब ५० से ६० किलो का था उठाकर चल नहीं सके और गिर पडे और वहाँ पर खडे मे सब देख रहे लोगों में से एक व्यक्ति को यीशु के लिये उस क्रूस को उठाने का हुक्म दिया गया ।

किलें ढोने से पहले यीशु को दाखरस और लोहवान पीने को दिया जिसको पीने से यीशु ने इन्कार किया । (इसके पीने से दर्द का एहसास

कम हो जाता) । नीचे रखे क्रूस पर उन्हें पटका गया और फिर उनके हाथों में किलें ठोकी गई ।

ये ६ इंच लम्बे और लगभग पौना इंच मोटे इन किलों को यीशु के हाथों के नस जिसे सेंसोरीमोटर मीडियन नस (जिसमें दर्द का आभास होता है।) कहा जाता है ठोंकने से उनके दोनों हाथों में असहनीय दर्द पैदा हुआ । बहुत सचेतता से इन कीलों को मनुष्य की हड्डियों और मासपेशियाँ के बीच की जगह में मारा जाता था कि क्रूस पर लटके व्यक्ति का बोझ वे कीलें झेल सकें ।

पैरों में कीलें ठोंकने की तैयारी हुई, और यीशु को ऊपर उठाया गया और सीधी लकडी को आडी लकडी जोडी गई । फिर पैरों को घुटनों से थोडासा मोडकर एक के ऊपर दूसरा पैर रखकर एक लम्बी कील दोनों पैरों में ठोंकी गई । और फिर से कई नसें टूटीं और असहनीय दर्द होने लगा । यहाँ ये बात ध्यान देने की है की कीलों को हाथों और पैरों में इस तरह ठोंका गया कि किसी बडे रक्तवाहिनी को ना काटे जिससे अधिक रक्त नही बहा । इन कीलों को ठोंकने वालों ने ये सावधानी बरती ताकि ज्यादा खून ना बहे और दर्द सहने का समय लम्बा हो और मौत धीरे-धीरे (तडप-तडपकर) हो ।

अब जबकि यीशु को कीलोंसे क्रूस पर लटकाया जा चुका था असली भयानकता अब शुरु होनी थी। हाथों की कुहनियों को मोडे रखा गया ताकि क्रूस पर लटके हुए व्यक्ति के हाथ उसके सिर के उपर रहें । शरीर का सारा भार कलाईयों में गडे कीलों पर था । ये तो स्पष्ट है कि ये असीम दर्द पैदा करता है पर इसके अलावा एक और भी असर इसका था वो ये कि इस स्थिती में साँस छोडना बहुत ही कठीन हो जाता है । साँस छोडने और फिरसे ताजी हवा लेने के लिये ये जरुरी था कि कील ठोके पैरों का सहारा लेकर शरीर को ऊपर की ओर ढकेला जाए । जब पैरों का दर्द असहनीय हो जाय तो क्रूस पर लटके व्यक्ति को फिरसे अचानक सारा बोझ अपने हाथों पर डालना पडता । दर्द का एक भयानक चक्र आरंभ हुआ, हाथों पर लटके, साँस लेने में असमर्थ, साँस लेने के लिये जल्दी से अपने पैरों की मदद से ऊपर उठना और फिर से नीचे लटक जाना, ये चलता रहा ।

ये पीडा दायक क्रिया और भी अधिक कठीन होती गई क्योंकि यीशु का छलनी किया हुआ पीठ क्रूस की लकडी पर रगड रहा था, साँस की कमी के कारण स्नायु में जकडन आने लगी और इसके फल स्वरुप साँस बाहर छोडना और कठीन हो गया ।

इस तरह से यीशु कई घण्टों तक तडपते रहे और अन्ततः एक ऊँचे स्वर के साथ अपने प्राण त्याग दिये ।

मृत्यु का कारण – यीशु की मृत्यु में कई सारी बातें शामिल हैं। घबराहट और साँसों के रुकने से कई व्यक्तियों की क्रूस पर मृत्यू होती है, पर यीशु के मामले में हृदय विकार के कारण मृत्यु संभावित बात हो सकता है। ये इसलिये कहा जा सकता है क्योंकि कुछ ही घण्टों के भीतर एक ऊँचे स्वर में चिल्लाने के साथ तुरन्त मृत्यु (पीलातुस यीशु को मृत पाकर बडा ही चकित हुआ) । एक घातक हृदय विकार या हृहय के नस फटना ये उनकी मृत्यु के कारण हो सकते हैं।

भाले की चोट – यीशु पहले ही मर चुके थे पर यीशु के साथ लटकाए गए गुन्हेगारों के पैर तोडे गए (ताकि उनकी मौत जल्दी हो सके) । हम ने ये भी पडा है कि एक सैनिक ने भालें से यीशु के बगल में छेद किया । बगलमें मतलब कहाँ ? युहन्ना के द्वारा उपयोग किये गए शब्द से लगता है कि पंजर में और यदि वह सैनिक ये चाहता कि यीशु सही में मर जाएँ तो भाला मारने की सबसे अच्छी जगह दिल था ।

उस घावसे 'रक्त और पानी' बहने लगा ये भाले की उस चोट के कारण था जो पंजर से होकर हृदय तक पहुँचा था (विशेषतः सीधी हाथ की ओर से, जैसे पारम्पारिक रुपसे घाव की जगह बताई जाती है।) हृदय के चारों ओर फैले थैलेके फटने के कारण उसमें से रक्त से अलग हुआ पानी बहने लगा और हृदय के छिदने के कारण उसके पीच्छे रक्त भी बहने लगा ।

निष्कर्श – क्रूस पर लटकाए जाने के बारे में सुसमाचार में दिया गया विस्तारीत लेखा और ऐतिहासिक सबूत हमारे इस निष्कर्ष को मजबूत बनाता है, और आधुनिक चिकित्सा ज्ञान भी वचनों के इस दावे की पुष्टी करता है कि यीशु क्रूस पर मरे ।

अध्याय –८

पश्चाताप

उपयोग किये गए वचन

१. लूका १३:५	२) प्रेरित २६:२०
३) मत्ती ५:२८–३०	४) २ कुरुन्थियों ७:१०
५) इफिसियों ४:२२–३२	६) प्रेरित २:३८
७) भ.सं. ५१:१–१७	

उद्देश्य : अनुग्रह पर विश्वास करने के बाद, पवित्र शास्त्र का ये मानना है कि पापों की क्षमा के लिये बप्तिस्मा और बप्तिस्मा के लिये पश्चाताप आवश्यक है। **(प्रेरित २:३६–३८)** । पश्चाताप के लिये यूनानी शब्द है 'मॅटानोईआ' जिसका अर्थ है. '' किसी के विचार या उद्देश्य को बदलना ।'

प.प्र. आप कैसे हो ? अपने पापों की कबुली के बाद आपको कैसा लग रहा है ? क्या कुछ और भी है जिसे आप कबुल करना चाहते हो ?

नि. आज हम पश्चाताप के बारे में सीखंगे । क्या आपको पश्चाताप का अर्थ मालूम है ? इसका अर्थ है, '' किसी के विचार या उद्देश्य को बदलना ।'' यही आपको भी करना चाहिये । सिर्फ पापों की कबुली काफी नहीं है, परन्तु अपने पापों से (विचार या उद्देश्य को बदलना) पश्चाताप करना बहुत महत्वपूर्ण है। बहूतों को लगता है कि पश्चाताप एक भावना (एहसास) है। वे कहते हैं पश्चाताप का अर्थ है आपको सही में अपने पापों से घृणा होनी चाहिये । पर पवित्र शास्त्र इस भावना से बढकर कुछ सिखाता है। आज हम यही सीखंगे कि पवित्र शास्त्र के अनुसार सही पश्चाताप क्या है।

१. लूका १३:५

परमेश्वर हमारे लिये केवल दो ही चुनाव रखते हैं १) पश्चाताप या २) नाश

२. प्रेरित २६:२०

अ. पौलुस जहाँ भी गया पश्चाताप का प्रचार किया ।

ब. सच्चा पश्चाताप केवल पापों को छोडना ही नही पर परमेश्वर की ओर मुडना भी चाहिये ।

क. हमारे कामों से परमेश्वर और दूसरे लोग ये जान जाएँगे कि हमने पश्चाताप किया है। (शब्दों में विचारों में और कार्यों में बदलाव)

पश्चाताप का चित्र

पश्चाताप = पाप से मुँह मोडना और परमेश्वर की ओर मुडना

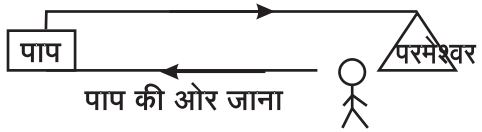

३. मत्ती ५:२८-३०

अ. पाप की ओर हमें ऐसे देखना है कि वो पाप है। पाप छोटा या बडा नहीं होता। वासना भी व्यभिचार है।

ब. हमें हमारे पापों को ''काट'' डालना है। आपको आपके पापों से घृणा करना है तभी आप बदल सकते हैं। क्या आपके जीवन में अब भी कोई ऐसा पाप है जिससे आप घृणा नहीं करते ?

चेतावनी - यदि किसी पाप के प्रति आप अब भी आकर्षित हो तो - हो सकता है कि कुछ समय के लिये आप उसे छोड दो पर फिर से आप उसके चंगुल में फंस सकते हो ।

४. २ कुरुन्थियों ७:१०

साधारणतः हम हमेशा पाप से घृणा करते हैं । पवित्र शास्त्र कहता है पाप के प्रति हमारे दो प्रकार के शोक हो सकते हैं।

१) परमेश्वर भक्ति का शोक जिसके कारण आपको सही में पापोंसे घृणा होती है और यह सच्चा और अनन्त बदलाव लाता है और आप फिर से उस पाप को नहीं दोहराते । यह आपको उध्दार की ओर ले जाता है।

२) संसारिक शोक से आपको पापसे घृणा लगती है पर आप बदलते नहीं । वही पाप आप फिर करते हैं। यह मृत्यु (नर्क) की ओर ले जाते हैं।

उदाहरण - बिना टिकट पकडे जाना

५. इफिसियों ४:२२:३२

वचन विशेष रुप से कहता है कि हमें पुराने मनुष्यत्व को उसकी इच्छाओं और उपयोगों के साथ ''उतार'' डालना चाहिये ।

हमारे पुराने पापमय विचारों और उपयोगों को उतार डालना ही काफी नहीं । हमें नया मनुष्यत्व ''पहन'' लेना चाहिये । दूसर शब्दों में हमें अपने पुराने बरें आदतों की जगह नए सही स्वभावों को अपनाना चाहिये । बुरे विचारो की जगह धार्मिक विचार (हमारे मन को नया बनाना)।

उदा. वचन २५ - झूठ बोलना छोडकर उसकी जगह (पहनलो) सच बोलना।

व.२८ - चोरी करना (पुरानी आदत) छोड दो इसकी जगह काम करो और जरुरतमन्दों के साथ बाँटो ।

व. २९ - गन्दी बात करना छोडकर ऐसी बातें करो जो दूसरों की उन्नति और मदद् करें ।

व ३१-३२ - कडुवाहट, प्रकोप, क्रोध, कलह और निन्दा और वैरभाव को उतार फेंको और उनकी जगह कृपा, करुणा और क्षमा (को पहनो) करना सीखो । इसी तरह से हम बदल सकते हैं।

अब पश्चाताप के बाद मुझे क्या करना हैं ?

६. प्रेरित २:३८

नि. पहले पश्चाताप करो और फिर बप्तिस्मा लो तब ही तुम्हारे पाप क्षमा किये जाएँगे, क्या आप इसके लिये तैयार हो ?

७. भ. संहिता ५१:१-१७ इस पाठ के अन्त में -

- इस भजन संहिता को प्रार्थना की तरह पढो और खोजी को प्रोत्साहन दो कि दाऊद की तरह अपने पापों के प्रति परमेश्वर के सामने गिडगिडाए । आओ प्रार्थना करें ।

पश्चाताप के कुछ और पाठ

लूका १३:५ - परमेश्वर हमें सिर्फ दो ही चुनाव देते है १) पश्चाताप या

२) नाश, बिल्कूल स्वर्ग और नर्क की तरह, आप या तो अन्धियारे में हो या उजाले में । इसके बीच परमेश्वर के पास और कोई जगह नही है। यदि आप पश्चाताप नहीं करेंगे तो नाश हो जाओगे। कौनसा चुनाव आप करना चाहते हो ?

पश्चाताप क्या नहीं है ?

१. सिर्फ दोषी महसूस करना नही - प्रेरित २४:२५

फॅलिक्स ने दोषी महसूस किया पर पश्चाताप नहीं किया ।

हमारे पापों के प्रति हमें दोषी महसूस होता है। यह एहसास पश्चाताप के पहले आता है, पर यह पश्चाताप नहीं है।

२. अपने पाप के प्रति सिर्फ बुरा महसूस करना ही नही - २ कुरु ७:१०

- कुछ लोग अपने पापों के बारे में बुरा महसूस करते हैं सिर्फ उसके नतीजों के कारण या पकडे जाने के कारण ।
- कुछ लोग बुरा जरुर मानते हैं पर उस गलती के लिये नहीं जो उन्होंने किया पर उसमें पकडे जाने पर जो जुर्माना भरना पडा उस लिये।

३. एक अच्छा व्यक्ति बनने से ही नहीं - यशायाह ६४:६

- कई लोग अपने ताकत पर भरोसा रखकर अपने आपको बदलने की कोशीश करते है।
- किसी भी अकेले प्रयत्न में एक स्वधार्मिकता का जड होता है, जो इस बात को नहीं मानता कि उसे परमेश्वर और पाप से पश्चाताप की आवश्यकता है।

४. सिर्फ धार्मिक बननाही नही लुका १८:९-१४

- व्यवहारिक और स्वभाविक रुप में फरीसी बहुत ही धार्मिक थे ।
- वे उपवास रखते, प्रार्थना करते और उनके धार्मिक उत्सवों में भाग लेते, अपना दशमांश देते, पर कभी पश्चाताप नहीं करते थे ।

५. सिर्फ सच्चाई जानना ही नही - याकूब २:१९-२०

- सिर्फ सच्चाई के बारे में बौध्दिक ज्ञान इस बात की गारन्टी नहीं देता कि सच्चाई किसी के जीवन का जीता जागता सच बन चुका है।
- दिमाग से विश्वास करना और मन से विश्वास करना दो अलग बाते हैं। **(रोमियों १०:९-१०)**

सच्चा पश्चाताप क्या है ?

१. अपने पापों के लिऐ परमेश्वर से क्षमा माँगना . **भ.सं. ५१:१-४, ३८:८**

- सच्चा पश्चाताप एक ऐसा शोक है जो खुद के लिये या दूसरे व्यक्ति के लिये नहीं पर पहले और सबसे पहले सच्चा शोक परमेश्वर के लिए ।

२. अपने पापों के प्रति खुला रहना । **भ. सं. ३२:५, १ यूहन्ना १:९, याकूब ५:१६**

३. अपने पापों को मान लेना । **नीतीवचन २८:१३**

४. पाप से घृणा । **मत्ती ५:२९-३०**

५. दुसरों से जो लिया है, जब वो लौटाना मुमकीन हो। **लूका १९:८**

पश्चाताप में क्या बात होती है।

१. पाप से मन फिराना । **गल. ५:१९-२१, इफि ५:५, जकर्याह १:४**

२. संसार की बातों से मन फिराना । **१ यूहन्ना २:१५, याकूब ४:४**

३. अपने आप कि चाहतो से मन फेरना । **२ कुरू ५:१५, २ कुरू १४:२६**

४. परमेश्वर की ओर मुडना । **प्रेरित २०:२१, २६:२०, जकर्याह १:३**

५. पुराने मनुष्यत्व को उतारकर नया मनुष्यत्व पहनना ।

इफि ४:२२-३२, कुलु ३:५-१४

निष्कर्ष प्रेरित २:३८

नि. पहले पश्चाताप करो और बप्तिस्मा लो, तभी आपके पाप क्षमा किए जाएँगे, क्या आप इसके लिए तैयार हो ?

विशेष पापों से पश्चाताप में मद्द करने के लिए कुछ उपयोगी वचन :

इन वचनों का उपयोग केवल कुछ विशेष पश्चातापों से निपटने के लिए हि करें हमारा उद्देश्य यह है कि उनको यह बताएँ कि उनके विशेष पापों से कैसे दुसरों को और परमेश्वर को चोट पहुँचाती है।

इस पाठ में उनको मद्द करें यह जानने की कि कैसे उनके पापोंने उनके चरित्र पर असर किया और उनको इन चरित्र में बदलने की चुनौती दो ।

१. वे लोग जो पश्चाताप से इन्कार करते । रोमीयो २:४

२. वे लोग जो संसार से प्यार करते हैं। याकूब ४:४

३. वे लोग जिन्हें पैसे से प्रेम है। लूका १६:१३-१५, नि.व १५:२७

४. क्षमा करना कठीन । मत्ती ६:१४-१५

५. गर्भपात । यिर्मयाह १:५, भ.सं. १३९:१३-१६

६. स्त्रियों का शौक , कमजोर मन वाली स्त्रियाँ । २ तीमु ३:६-७, इफि ५:१५-१७

७. आलसी लोग , वो जो काम नही करना चाहते । २ थिस्स ३:१०

८. बच्चोंसे लैंगिक सम्बंध । मरकुस ९:३६, ४२, लूका १७:१-२

९. समलैंगिकता । १ कुरु ६:९

१०. स्वधार्मिकता, दुसरों को निचा देखना । लूका १८:९-१४

११. घमण्ड । फिलि २:३, निति वचन १३:१०

१२. स्वार्थ के गहरे जड । २ तीमु ३:१-५

१३. कडुवाहट के गहरे जड । इब्रा १२:१५, कुलु ३:५-८

१४. विवाह के झगडे । कुलु ३:१८, इफि ५:२२-३१

१५. धोका । निति वचन १५:४

१६. बॉय फ्रेन्ड, गर्ल फ्रेन्ड से सम्बंध । इफि ५:३

अध्याय -९

बप्तिस्मा

उपयोग किये गए वचन

१. प्रेरित २:३६-४१	२) यूहन्ना ३:३-५
३) मत्ती २८:१८-२०	४) रोमियों ६:३-७
५) १ पतरस ३:२०-२१	६) प्रेरित ८:२६-३९
७) प्रेरित १६:१३-१५	८) प्रेरित २२:१-१६

उद्देश्य : क्रूस के बारे में प्रचार करने के बाद पतरस ने लोगों को पापों की क्षमा के लिये पश्चाताप करने और बप्तिस्मा लेने को (प्रेरित २:३८)। यह पाठ यीशु के बलिदान और बप्तिस्मा द्वारा हमारे पापों की क्षमा के बीच की कडी को मबजूत करता है।

१. प्रेरित २:३६-४१

पतरस ने ये प्रचार किया कि हर किसी को ये विश्वास और स्वीकार करना चाहिये कि यीशु ही प्रभु और ख्रिस्त हैं।

हरएक वैयक्तिक रुप से यीशु के क्रूस पर जाने का जिम्मेदार है। इस प्रचार ने लोगों के हृदय छेद दिये और उन्होंने पूच्छा, ''हम क्या करें ?'' पतरस ने उत्तर दिया कि सबसे पहले पश्चाताप फिर पापों की क्षमा के लिये बप्तिस्मा और पवित्र आत्मा का दान प्राप्त करें ।

२. यूहन्ना ३:३-५

प्र. यदि हम स्वर्ग जाना चाहें तो यीशु के अनुसार क्या होना चाहिये ?

(हमें फिर से जन्म लेना होगा । हमें पानी और आत्मा से जन्म लेना चाहिये)।

प्र. पानी और आत्मा से हम कब जन्म लेते हैं ?

३. मत्ती २८:१८-२०

प्र. किस प्रकार के लोगों को बप्तिस्मा देना चाहिये ? (वे लोग जो इतने वयस्क हों कि उन्हें वो सब जो यीशु ने आज्ञा दी सिखाया जा सके, वे समझ सकें और मान सकें (व.२०) इनमें नवजात शीशु और बच्चे नहीं आते ।)

नि. हम यह भी देखते हैं कि बप्तिस्मा यीशु की एक आज्ञा है। हमें उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिये ।

४. रोमियों ६:३-७

व. ३ – जब हम बप्तिस्मा लेते हैं तब हम यीशु के मृत्यु में सहभागी होते हैं।

व. ४ – जब हम बप्तिस्मा लेते हैं तब हम यीशु के साथ गाडे जाते हैं। हमें इसलिये बप्तिस्मा दिया जाता है ताकि (व.४) हम नया जीवन जीयें ।

व. ६ – जब हम बप्तिस्मा लेते हैं हमारा पुराना मनुष्यत्व यीशु के साथ क्रूस पर चढाया जाता है।

व - ७ – जब हमारा पुराना मनुष्यत्व मर जाता है तो हमें किससे आजादी मिलती है ? पाप से ।

बप्तिस्मा का चित्र

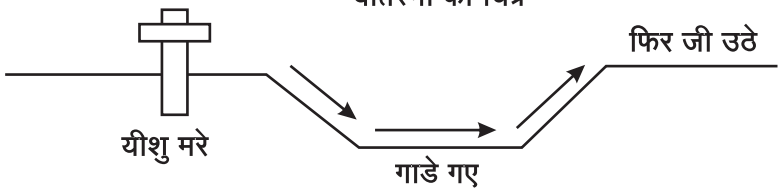

बप्तिस्मा में हम यीशु की मृत्यू, गाडे जाने और पुनरुत्थान में भाग लेते हैं।

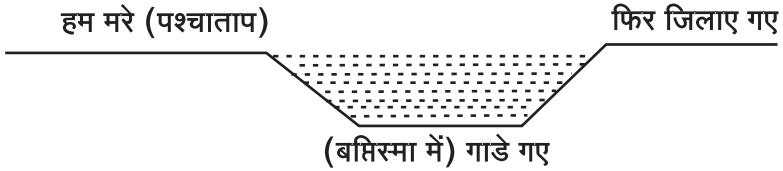

नि. तो हम यह देखते हैं बप्तिस्मा एक विश्वास है जिसके द्वारा हम यीशु की मृत्यु, गाडे जाने और पुनरुत्थान में भाग लेते हैं। यीशु का भाग होने के लिये हमें बप्तिस्मा लेना जरुरी है।

(**नि.** जैसा हम **इफि. १:७** में देखते हैं, यीशु का लहू हमें बचाता है। और **रोमियों ६:३-४** यह दिखाता है कि बप्तिस्मा में विश्वास के द्वारा हम यीशु के रक्त के और यीशु के साथ गाडे जाने से सन्बन्ध रखते हैं।)

५. १ पतरस ३:२०:२१

प्र. नूह के समय में कितने लोग बचाए गए ? (८)

आठ लोग पानी से बचाए गए – इसका क्या अर्थ है ?

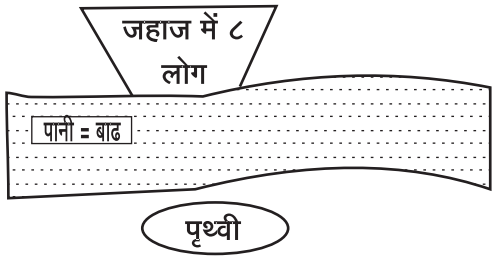

यह पानी बप्तिस्मा का निशान है। इस बाढ के पानी ने नूह और उसके परिवार को संसार के पापों से अलग किया ।

उत्पत्ती ६:५ – संसार पापसे भरा था । जैसे पानी ने संसार के पापों से जहाज में बैठे उन आठ लागों को अलग किया, ठीक उसी तरह बप्तिस्मा हमें हमारे पापों से दूर करता है। यही कारण है कि पतरस कहता है, ''पानी बप्तिस्मा का निशान है जो हमें भी बचाता है।'' बाढ का पानी बप्तिस्मा की निशानी है (इसके विपरीत नहीं) । पवित्र शास्त्र कभी भी बप्तिस्मा को निशानी नही बतात ।

प्र. वचन २१ के अनुसार बप्तिस्मा क्या करता है ? (हमें बचाता है।) आओ अब हम पवित्र शास्त्र में बप्तिस्मा लेने वाले कुछ लोगों के उदाहरण को देखें ।

६. प्रेरित ८:२६-३५

प्र. वापस घर लौटते वक्त खोजा क्या कर रहा था ?

(पवित्र शास्त्र पढ रहा था)

प्र. क्या वह एक दीन या घमंडी व्यक्ति था ?

(दीन – क्योंकि उसने मद्द माँगी व. ३०-३१)

प्र. वह खोजा एक अच्छा धार्मिक व्यक्ति था. पर ना ही उसने उध्दार पाया था और नाही वह एक सही मसीही था. इसलिए उन्होंने रथ में एक साथ पवित्र शास्त्र सीखा, जैसा की हम पिछले कुछ दिनों से कर रहें हैं फिलिप ने उसे यीशु के बारे में सुसमाचार सुनाया ।

प्र. यीशु के बारे में सुसमाचार क्या है ? (वह आए लोगों कि मद्द की, हमारे पापों के कारण मरे और फिर से जिलाए गए और इसीलिए हम भी बचाए जा सकते है ।

प्रेरित ८:३६-३९ – जब उन्होंने पानी देखा, वे दोनो निचे गए और ''पानी में उतरे'' और फिलीप ने खोजे को बप्तिस्मा दिया (व.३८).

पानी में पूरा डुबना ही बप्तिस्मा या, यूनानी भाषा में ''बप्तिस्मा'' का यही अर्थ है।

प्र. इथोपिया पहुँचने तक क्यों खाजा रुकना नहीं चाहता था ?

(वह तुरंत क्षमा पाना चाहता था)

नि. प्रेरित २ कि तरह हम फिर से यह देखते हैं कि बप्तिस्मा के लिए जल्द बाजी और फिर आनंद.

७. प्रेरित १६:१३-१५ (स्त्रियों के लिए)

पौलुस के प्रचार को सुनकर उस पर प्रतिक्रिया करने के लिए परमेश्वर ने उस स्त्री के मन को खोला ।

प्र. उस स्त्री ने प्रचार के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दिखाई ।

(तुरंत बप्तिस्मा)

प्र. आपको क्या लगता है, उसने क्यों इंतजार नही किया ?

(वह उध्दार चाहती थी)

८. प्रेरित २२:१-१६ (सभी के लिए)

प्र. एक मसीही बनने से पहले पौलुस कैसा था ?

(कलीसिया को सताने वाला एक हिंसक व्यक्ति था)

प्र. उसे क्या हुआ ? (यीशु ने उसे दर्शन दिए)

प्र. जब उसने यीशु से बात की तो क्या उसने उनपर विश्वास किया ? (हाँ)

प्र. पर क्या वो अब उध्दार पा चुका था?(नहीं)

प्र. क्या उसने यीशु की आज्ञा मानी ? (हाँ व.१०-११ मे पौलुस दमिश्क को गया)

प्र. पर क्या अब भी उसने उध्दार पाया था ? (नहीं)

नि. प्रेरित ९:९:१२ के अनुसार पौलुस ने ३ दिनों तक ना कुछ खाया ना ही पिया, वह सिर्फ प्रार्थना में लगा रहा ।

प्र. पर क्या अब भी उसने उध्दार पाया ? (नहीं / उसके पाप नही धोए गए थे)

प्र. पौलुस ने कब उध्दार पाया ? (व.१६) (जब उसने बप्तिस्मा लिया)

प्र. व. १६ के अनुसार बप्तिस्मा का उद्देश्य क्या है ? (पापों को धोना)

प्र. क्या हनन्याह चाहता था कि पौलुस और इंतजार करे ? (नही व. १६ कहता है, ''अब क्यों देर करता है ?)''

नि. एक बार फिर हम देखते है जल्द बाजी और आनन्द जैसे पौलुस को तुरंत बप्तिस्मा दिया गया । (प्रेरित ९:१८)

प्र. आप किस लिए रुके हो ? आप कब बप्तिस्मा लोगे ?

निष्कर्श :

प्र. आपको क्या लगता है कि आपको क्या करना चाहिए ?

प्र. आप कब बप्तिस्मा लेना चाहते हो ?

प्र. आप बप्तिस्मा क्यों लेना चाहते हो ?

(उध्दार, क्षमा पाने के लिए और पवित्र आत्मा का दान पाने के लिए)

अध्याय –१०

यीशु प्रभु हैं

उपयोग किये गए वचन

१. प्रेरित ११:२५–२६	२) मरकूस १२:२८–३१
३) लूका ९:२३–२६	४) लूका ११:१–५
५) लूका १४:२५–३३	६) १ यूहन्ना २:३–६
७) यूहन्ना ८:३१–३२	८) यूहन्ना १३:३४–३५
९) मत्ती ७:२१–२३	१०) मरकुस १:१६–२०
११) रोमियों १०:९–१३	

उद्देश्य : यीशु को अपना प्रभु बनाने का क्या अर्थ है यह सिखाने के लिये । बप्तिस्मा के समय हम ये अंगीकार करते हैं कि यीशु मेरा प्रभु है। इस अंगीकार का क्या अर्थ है ? इसका हमारे जीवन और हमारे जीवन में किये गए चुनावों पर क्या प्रभाव होगा। यह पाठ इस बात को तय करता है कि ''यीशु के पीच्छे चलने'' का सही अर्थ क्या है। आप एक अनुयायी (पीच्छे चलने वाले) हो इसका क्या अर्थ है। ? जो उनके पीच्छे चलता है उसका मन कैसा होता है ? किस प्रकार के संकल्प दिखाने की आवश्यकता है ? जिसने यीशु के पीच्छे चलने का निर्णय किया उसका जीवन कैसा होता है ?

मसीहियों के लिये – आप पूच्छ सकते हैं कि क्या आप एक मसीही हो ? आपको कौनसी चीज मसीही बनाती है ? (उन्हें उत्तर देने दें ।) आज वचनों से हम सीख सकते हैं कि एक व्यक्ति को कौनसी बातें मसीही बनाती हैं । सबसे पहले हम यह देखेंगे कि पवित्र शास्त्र में मसीही ये शब्द सबसे पहले कहाँ उपयोग किया गया ।

१. प्रेरित ११:२५–२६

१)''शिष्य'' इस शब्द को आप एक साधारण रुपसे बिना धार्मिक सम्बन्ध बनाए कैसे विश्लेषण कर सकते हो ?

२) इस वचन के अनुसार ''शिष्य'' और 'मसीही' में क्या कोई अन्तर है ? नहीं । इन दोनों का एकही अर्थ है। शीष्य = मसीही ।

३) क्या आप जानते हो नया नियम में ''मसीही'' शब्द का उपयोग कितनी बार किया गया है ? (तीन बार – प्रेरित ११:२६, २६:२८, १ पतरस ४:१६)

४) कितनी बार ''शीष्य'' शब्द का उपयोग किया गया ? (२५० से भी अधिक बार) आओ हम कुछ वचनों को देखें जो ''यीशु के पीछे चलने'' का विश्लेषण करते हैं)

२. मरकूस १२:२८–३१

१) दो बहुत ही महत्वपूर्ण आज्ञाएँ ये है कि **परमेश्वर से प्रेम करो** और **फिर अपने पडौसियों से अपने समान प्रेम रखो** ।

२) एक शिष्य होने के नाते हमें पूरे मन से परमेश्वर से एक प्रेम का रिश्ता रखना चाहिये और अपने पडौसियों से प्रेम रखना चाहिये ।

३) जब हम इन दो आज्ञाओं को समझते हैं तब हम ये भी जान पाते है कि यीशु का शीष्य बनने के लिऐ वे हमसे क्या अपेक्षा करते है।

३. लूका ९:२३–२६ –

१) ऐसा मन बनाने पर जोर डालो जो यीशु चाहते है । यह वचन हमें कहता है कि यीशु के पीछे चलने वालों से यीशु की क्या अपेक्षाएँ थी ।

- अपने आप से इन्कार
- रोज अपना क्रूस उठाकर चलना
- यीशु के लिये अपना प्राण देने के लिये तैयार
- यीशु या उसके वचनों से लज्जा ना करना

२) शीष्यता के इन माँगा के बारे में आप कैसा महसूस करते हो ?

३) ''अपने आपका इन्कार'' करने का क्या अर्थ है ?

''रोज अपना क्रूस उठाकर चलना'' इसका क्या अर्थ है ?

४) यीशु के पीच्छे चलने के लिये वो कौनसी बातें है जिन्हें छोडना आपके लिये कठिन होगा ?

५) हम कैसे ''यीशु और उनके वचनों से लज्जा'' कर सकते हैं ?

४. लूका ११:१-५

१) यीशु ने अपने शिष्यों को प्रार्थना कैसे करना है ये सिखाया । उन्होंने सिखाया कि परमेश्वर को ''हमारा पिता'' कहकर बुलाएँ ।

२) एक शिष्य होने के नाते परमेश्वर के साथ पिता के रुपमे एक वैयक्तिक संबध होना चाहिये । हम परमेश्वर से प्रार्थना के द्वारा बातें करके और वचनों के द्वारा उन्हें सुनकर उनसे एक रिश्ता बना सकते है।

५. लूका १४:२५-३३

१) हमारे जीवन और पारिवारीक सम्बन्धों से बढकर हमें यीशु से प्रेम करना चाहिये । (इसका अर्थ ये नहीं कि हम अपने माता-पीता का आदर ना करें और ना ही उनकी सेवा करें ।)

२) अपना क्रूस उठाने की इच्छा रखो और इसके बावजूद यीशु के पीच्छे चलो।

३) पीच्छे चलनेसे पहले ही इसकी कीमत क्या चुकानी पडेगी ये जानलो । यीशू के पीच्छे चलना एक गम्भीर और जीवनभर का निर्णय होना चाहिये ना की भावनात्मक और कुछ ही समय के लिये ।

४) सबकुछ त्याग करने का स्वभाव होना चाहिये ।

६. १ यूहन्ना २:३-६

१) यह वचन हमें बतात है कि कैसे हम ये जानें कि कोई व्यक्ति मसीही है या नही ।

२) वह जो यीशू को जानता है उनकी आज्ञाओं को मानना चाहिये अन्यथा यह दावा गलत है। (लूका ६:४६)

३) यीशु के पीच्छे चलने वाले की यह निशानी है कि वह यीशु की तरह अपना चाल चलन रखें ।

७. यूहन्ना ८:३१-३२

१) एक शिष्य (मसीही) होने के लिये विश्वास काफी नही है।

२) आज्ञा पालन (मेरे वचनों में बने रहों) शीष्य बनने के लिये अति आवश्यक है।

८. यूहन्ना १३:३४-३५

१) यह एक नयी आज्ञा यीशु हमें दे रहे हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि हम प्रेम के उनके उदाहरण पर चलें ।

२) यीशु के शीष्य होने की एक निशानी प्रेम है।

खोए हुओं से इतना प्रेम कि उन्हें ढूँढे और बचाएँ, मनुष्य का मछुवारा बनना सीखना, महान कार्य करने के लिये तैयार । (मत्ती २८:१८-२०, लूका १९:१०, मरकुस १:१६-२०)

- दीनों से प्रेम (मत्ती २५:३२-४६)
- अपने परीवार से प्रेम (१ तीमु ५:८)
- कलीसिया से प्रेम (१ पतरस १:२२, गल ६:१०)
- हमारे दुश्मनों से भी प्रेम (मत्ती ५:४४)

९. मत्ती ७:२१-२३

१) यीशु को प्रभु बनाना शब्दों से कहीं ज्यादा महत्व रखता है।

२) धार्मिकता में प्रभु को पुकारना काफी नहीं है, या भविष्यवाणी करना और चमत्कार करना भी काफी नही है।

३) उध्दार के लिये हमें परमेश्वर की इच्छानुसार चलना जरुरी है।

४) सिर्फ वही जो पिता की इच्छा पूरी करता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा ।

१०. मरकूस १:१६-२०

१) यह वचन यह बतात है कि कैसे यीशु ने अपने पहले शीष्यों शमौन, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना को बुलाया और कैसे उन्होंने प्रतिक्रिया की ।

२) शीमौन और अन्द्रियासने कैसी प्रतिक्रिया की ? याकूब और यूहन्ना ने कैसी प्रतिक्रिया की ?

३) ''मेरे पीच्छे होलो'' यीशु के इस बुलावे पर तुम कैसी प्रतिक्रिया करोगे ?

४) ''मनुष्यों के मच्छुवारे'' इसका क्या अर्थ है ?

११. रोमियों १०:९-१३

बप्तिस्मा के समय हम ये अंगिकार करेंगे कि ''यीशु मेरा प्रभु है।'' ''यीशु मेरे प्रभु है'' इस बात का अंगिकार करने का क्या अर्थ है ?

अ) यह अंगिकार इस बात की घोषणा करता है कि यीशु ख्रीस्त के प्रति हम पूर्णतः संकल्पित और लवलीन हैं।

ब) इसका अर्थ है कि मेरी इच्छा से बढकर मैंने उसकी इच्छा को मानने का निर्णय बनाया है।

क) इसका अर्थ है कि चाहे जो भी कीमत चुकानी पडे मैं ने उनकी आज्ञा मानने का निर्णय किया है।

ड) सीर्फ मुँह से अंगीकार काफी नही है, हमें हमारे मन से विश्वास करना चाहिये ।

इ) (२ तिमु. २:१९-२१) यीशु का अंगीकार करने का अर्थ है कि एक व्यक्ति सभी बुरे काम छोडकर अच्छे काम करे ।

निष्कर्ष : यीशु के शीष्य बनना या उन्हे अपना प्रभू बनाने का अर्थ है कि उनके साथ एक प्रेम का, आज्ञा पालन का और अपने आपको पूरी तरह उनके लिये दे देने का एक रिश्ता बनाना ।

हम हर एक चीज से बढकर यीशु के साथ हमारे रिश्ते को मानते हैं।

अध्याय -११

कलीसिया

उपयोग किये गए वचन

१. कुलुसियों १:१८,	२) १ कुरुन्थियों १२:१२-२६
३) १ तिमुथिमुस ३:१५	४) इफिसियों २:१९-२२*
५) इफिसियों ४:११-१६*	६) इब्रानियों १३:१७*
७) इब्रानियों ३:१२-१३	८) इब्रानियों १०:२४-२५
९) प्रेरित २:४२	१०) कुलुसियों ३:१२-१७*
११) मत्ती १८:१५-१७*	* चुनावी वचन

उद्देश्य : खोजी को इस बात से प्रोत्साहन दें कि बप्तिस्मा के बाद अपने आपको बचाने के लिये उन्हें अकेला नहीं छोडा जायेगा । इसके बजाए यीशु हमें बप्तिस्मा द्वारा एक शरीर याने कलिसीया से जोडते हैं । (१ कुरु १२:१२-१३) जहाँ एक समान विचार रखने वाले शिष्यों का एसा गुट है जो उनमें लवलीन रहते हैं । ये भाई बहन परमेश्वर के साथ चलने में लगातार आपको प्रोत्साहन देने के निमित्त हैं।

कलिसिया का यूनानी शब्द है, ''एक्लेसिया'' जो एक यौगिक शब्द है जिसका अर्थ है बुलावा, एक सभा ।

१. कुलुस्सियों १:१८

अ) कलीसिया मसीह का शरीर है।

ब) शरीर को सिर की आवश्यकता होती है। मसीह कलीसिया का सर है।

क) कलीसिया आवश्यक है। एक व्यक्ति यीशु को ''हाँ'' और उनकी कलीसिया को ''ना'' नहीं कह सकता ।

२. १ कुरुन्थियों १२:१२-२६

अ) वे जो बचाए गए हैं मसीह के शरीर का अंग हैं।

ब) एक आत्मा के द्वारा उनके शरीर में हमें बप्तिस्मा दिया गया है।

क) शरीर का हर अंग महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

ड) मसीह क शरीर में कोइ बँटवारा नही होना चाहिये ।
इ) एक दूसरे के प्रति हमारी स्वाभाविक जिम्मेदारी होनी चाहिये ।

३. १ तिमुथियुस ३:१५

अ) कलिसिया परमेश्वर का घर (परिवार) हैं।
ब) कलिसिया को सच्चाई की नींव और मूल आधार होना चाहिये ।

४. इफिसियों २:१९-२२

अ) परमेश्वर की कलिसिया का निर्माण यीशु को कोने का पत्थर बनाकर किया गया है।
ब) प्रेरित और भविष्य द्वक्ता इसकी नींव हैं।
क) सिध्दान्तों की बातों में पवित्र शास्त्र कलिसिया का अधिकारी है।

५. इफिसियों ४:११-१६

अ) परमेश्वर कलिसिया को अनेक मंत्री देता है ताकि वे सेवा के काम के लिये उसके लोगों को तैयार करें।
ब) परमेश्वर की इच्छा यह है कि उसकी कलिसिया विश्वास में बडे और एकमत हो ।
क) ''जब हरएक अंग अपना काम करता है'' तब उसकी कलिसिया बढती है।
ड) अपनी कलिसिया को बढाने के लिये परमेश्वर आपका किस प्रकार से उपयोग कर सकता है ?

६. इब्रानियों १३:१७

अ) कलीसिया ने अगुवे चुने हैं और हमारा फर्ज है कि हम उनके आधिन रहें।

७. इब्रानियों ३:१२-१३

अ) हमें इस बात का ध्यान रखना है कि हमारे भाई धार्मिक बने रहें ।
ब) इसलिये हमे एक दुसरे को रोज प्रोत्साहन देना हैं।

८. इब्रानियों १०:२४-२५

अ) हमें इस बात पर सोचना चाहिये कि कैसे हम एक दूसरे को मसीह में उसकाएँ ।

ब) एक साथ मिलने की आदत में हम लगातार बने रहें । (प्रेरित २:४२)
क) हमें एक दूसरे को प्रोत्साहन देना है।

९. प्रेरित २:४२

अ) पहली शताब्दी की कलिसिया प्रेरितों के शिक्षण, मेलमिलाप, रोटी तोडने और प्रार्थना करने में (लगातार स्थिरतासे) लवलीन रहे। हमें उनकी लवलीनता की नकल करनी चाहिये ।

१०. कुलुसियों ३:१२-१७

अ) करुणा, भलाई, दीनता, नम्रता और सहनशीलता ये गुण परमेश्वर की कलिसिया में उससे रिश्ता बनाए रखने में हमें औरों से अलग दिखा सकते हैं।
ब) एक दूसरे की सह हो और किसी भी प्रकार के अपराध क्षमा करो।
क) धन्यवादित रहो ।
ड) एक दूसरे को चिताओ और सिखाओ ।

११. मत्ती १८:१५-१७

अ) यीशु सीखाते हैं कि मसीही कैसे अपने झगडे कलिसिया में सुलझाएँ ।

निष्कर्ष : आपको परमेश्वर की कलिसिया का अंग बनाने के लिये परमेश्वर की योजना को क्या आप समझ पा रहे हैं ? उसकी कलिसिया का अंग होना इस बात का अर्थ क्या आप समझ रहे हैं ? परमेश्वर की कलिसिया का सदस्य होने के नाते किस रुप में आप अपनी जिम्मेदारी पूरी कर सकते हैं? कलिसिया की मिटींग में आने का आपके लिये कितना महत्व है ?

अध्याय –१२

कीमत चुकाना

पुरुष और स्त्री

प्र. आप एक मसीही क्यों बनना चाहते हैं?

प्र. आप कब मसीही बनना चाहते हैं?

प्र. एक व्यक्ति कैसे मसीही बनता है?

प्र. पश्चाताप का अर्थ क्या है? क्या आपने पश्चाताप किया? कब?

प्र. हमें बपतिस्मा क्यों लेना चाहिये? बपतिस्मा का अर्थ क्या है?

प्र. यदि किसी को पश्चाताप किये बिना ही बपतिस्मा दिया जाता है तो क्या वे मसीही हैं? क्यों नही?

प्र. क्या मसीही बनने के कोई और तरीके हैं (जैसे शीशु बपतिस्मा, पुष्टिकरण, हाथों के सिर पर रखने से, अपने हृदय में यीशु से प्रार्थना करना)?

प्र. आपके कलीसिया के बाहर ऐसा कौनसा व्यक्ति है जो एक मसीही है जिसे आप जानते हैं? (परीवार, मित्र, धार्मिक लोग, पुरानी कलीसिया)

नि: बदल गए, परमेश्वर से प्रेम करते हैं, सिर्फ इसीलिये ईमानदार लोग मसीही नहीं कहलाए जा सकते – आज्ञा पालन करना ज़रुरी है।

इब्रानियों २:१

नि: कलीसिया से दूर हो जाना संभव है। यह निर्णय जीवन भर का निर्णय है, कलीसिया यीशु मसीह का शरीर है। यदि आप कलीसिया छोड़ते हैं तो आप परमेश्वर को छोड़ते हैं।

प्र. दूसरे यदि कलीसिया छोड़ दें तो आप क्या करोगे?

प्र. कलीसिया छोड़ने से अपने आप को बचाने के लिये आप क्या करोगे? (कुछ बातें यहां दी गई हैं जिनपर आपको ध्यान देना है:)

१. प्रार्थना समय:

प्र. अब तक आपका पवित्र शास्त्र अध्ययन और प्रार्थना कैसा था? (स्पष्ट उत्तर दें)

प्र. पवित्र शास्त्र अध्ययन से आपको क्या अन्तर्ज्ञान मिलता है?

२. खुलापन और पाप कबूली : १यूहन्ना १:८-१०

नि: खुला रहना और पाप कबूल करना बहूत महत्वपूर्ण है? हम में से कोई भी सिध्द नहीं है। जैसे हम विश्वास के साथ यीशु के पीच्छे चलते हैं, तो वह निरंतर हमारे पापों को क्षमा करते हैं। लेकिन हमें खुला रहना और पाप कबूल करना ज़रुरी है।

प्र. वो कौनसे मुख्य पाप हैं जिससे आपने संघर्ष किया है?

प्र. भविष्य में इन पापों से दूर रहने के लिये आप क्या करोगे? (क्रूस पर हमारे लिये यीशु ने जान दी इस बात को हमेशा याद रखना)

प्र. कलीसिया में आपके कौनसे दोस्त हैं जिनके पास जाकर आप अपने पाप कबूल कर सकते हैं?

३. दीनता से मार्गदर्शन पाना : इब्रानियों १३:७,१७

नि. दीन बनकर सलाह लेना बहूत ज़रुरी है। व्यक्तिगत गलतियों को बताया जाए तब भी दीन बने रहना।

प्र. एक शीष्य के नाते आपकी बड़ी कमज़ोरियां क्या हैं? चर्चा करें।

४. रिश्ते

प्र. भाईयों – बहनों के साथ एक बढ़िया रिश्ता होना चाहिये; उनके साथ पहल करें।
(कलीसिया में रिश्ते पवित्र होने चाहिये)

५. विवाह : (२कुरु. ६:१४-१८, १कुरु. ७:३९, एज्रा १०:२, १०-११ कुछ चुनावी अनुछेद हैं)

प्र. एक मसीही होने के नाते हमें सिर्फ मसीहियों से ही विवाह करना चाहिये। ऐसा क्यों?

प्र. यदि आपके परीवार वाले आपका विवाह कहीं और तय कर दें तो आप क्या करेंगे?

प्र. क्या आपने अपने बॉयफ्रेंड/गर्लफ्रेंड से पूरी तरह से रिश्ता तोड़ लिया है? यदि वो वापस आ जाएं तो क्या करोगे? उनके प्रति आप कैसा महसूस करते हो?

नि: मसीही होने के नाते, हम गुट में एक दूसरे की पसन्द जानने के लिये मिलते हैं? इसके द्वारा आपको कलीसिया के किसी भाई / बहन से विवाह करने का अवसर मिलता है। हम कभी भी कलीसिया के किसी भी भाई/बहन से अकेले नहीं मिलते। हम हमेशा सलाह लेते हैं।

६. विवाहितों के लिये:

प्र. आपके पती/पत्नी आपके बारे में क्या सोचते हैं? अपने रिश्ते में क्या आप सलाह लेने के लिये तैयार हो?

प्र. अपने बच्चों का विवाह कलीसिया के ही शीष्य के साथ करने का महत्व क्या आप समझते हैं?

प्र. जब आपके बच्चे विवाह के योग्य हो जाएंगे तब आप क्या करोगे? यदि आपके रिश्तेदार आपके बच्चे के लिये कहीं बाहर रिश्ता ढूंढ रहे हों तो आप क्या करोगे?

७. सताव : २तिमुथियुस ३:१२

प्र. जब आप सताए जाएं तब आप क्या करोगे? (जो सताए गए हैं उनका उदाहरण दो)

प्र. क्या आपने अपने सारे पुरानी मूर्तियां, पूजा-पाठ और विधियों को छोड़ दिया है? यह सब करना क्यों गलत है?

प्र. आपके इस बदलाव पर आपके परीवार की प्रतिक्रिया कैसी है? यदि भविष्य में वो और विरोध करें तो आप क्या

करोगे?

प्र. यदि वो आपको मारें, कमरे में बन्द कर दें, या फिर सारे परीवार मिलकर विचार करें तो आप क्या करोगे?

प्र. घर में आपका जीवन कैसे चल रहा है? क्या घर के कामों में आप अपने परीवार की मदद कर रहे हैं?

८. संकल्प

प्र. क्या आप कलीसिया के हरएक मिटींग में आने के लिये तैयार हो? क्या हमें दूसरी कलीसियाओं में जाना चाहिये? क्यों नहीं?

प्र. जिस शहर में कलीसिया नहीं है क्या हम उस शहर में रहने के लिये जा सकते हैं? (हमारी कलीसिया मुंबई, दिल्ली, कलकत्ता, बेंगलोर, मद्रास, पुने और कोचीन में हैं)

प्र. क्या आप शहर से बाहर जा रहे हैं? कितने समय के लिये?

नि: एक मसीही होने के नाते हमें ज्यादा लम्बे समय के लिये दूसरे शहरों में नहीं रहना चाहिये, क्योंकि हम कमज़ोर होकर कलीसिया से दूर हो सकते हैं। सच तो यह है कि कई इसी कारण से कलीसिया छोड़ चुके हैं।

९. काम / पैसा

नि. एक मसीही होने के नाते हमें इमानदारी से काम करना चाहिये। हर दिन काम पर जाना, मेहनत से काम करना, देर से ना जाना, दूसरों की मदद करना चाहिये। यदि परीक्षा हो तो मन लगाकर पढ़ना चाहिये। घर के कामों में

मदद करना चाहिये।

प्र. आप काम की जगह पर कैसे हैं? क्या वो आपको झूठ बोलने को कहते हैं?

प्र. आपकी पढ़ाई कैसे चल रही है? क्या आप मेहनत कर रहे हो?

प्र. क्या आप कलीसिया को देने के लिये तैयार हो? हम हमारे कुल वेतन का १०% देते हैं क्योंकि पवित्र शास्त्र में यही उदाहरण है।
(दशमांश=दसवां हिसा, मलाकी ३:८-१०)

१०. कलीसिया में सेवा करना

प्र. यीशु का शीष्य बनने के लिये दूसरों ने आपकी सेवा कैसे की? क्या आपने उनको धन्यवाद देकर उनको सराहा?

प्र. कलीसिया में किस प्रकार से आप दूसरों की सेवा कर सकते हैं? आप कौनसी ज़िम्मेदारियां लेना पसन्द करेंगे?

नि: अन्त में मैं आपको एक बढ़िया मसीही बनने के लिये चुनौती देना चाहता हूं। यह जीवन भर का एक निर्णय है। मैं नहीं चाहता कि दो महीने या एक साल बाद आप कलीसिया के मीटिंग में आना बन्द कर दो और फिर से पापों में गीरो। यदि आपको अपने निर्णय के प्रती कोई संदेह या हिचकिचाहट है, तो जब तक आप पक्का निर्णय न बना लें तब तक हम रुक सकते हैं।

अध्याय -१३

पुनरुत्थान

आज हम तर्कसंगत सबूतों के द्वारा यह देखेंगे कि मसीहियत क्यों एक सच्चाई है। इस अध्ययन में हम पवित्र शास्त्र को परमेश्वर के वचन के रुप में न देखते हुए एक ऐतिहासिक किताब के रुप में देखेंगे जो यीशु की मृत्यु के २० - ६० साल बाद लिखा गया। नए नियम के ४०,००० से भी अधिक हाथों से लिखे पत्र आज भी मौजूद हैं जो यह दर्शाते हैं कि यह ५०-९५ ए.डी. में लिखे गए हैं। ऐतिहासिक वचन जैसे लूका ३:१ और दूसरे वचन पुरातत्व विज्ञान द्वारा प्रमाणित हो चुका है। यह हो सकता है कि पवित्र शास्त्र एक झूठ या एक महाकथा हो, लेकिन हम जानते हैं कि यह यीशु के जीवनकाल में लिखा गया है।

१. मसीही धर्म का मूलः पुनरुत्थान

१कुरुन्थियों १५:१२-१९

प्र. यहां यह पुनरुत्थान के बारे में क्या कहता है?
(बिना इसके हमारा विश्वास व्यर्थ है, हम अब भी पाप में हैं, हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है)

नि: बिना पुनरुत्थान के मसीहियत कुछ नहीं। यह कोई फलसफा नहीं बल्कि एक ऐतिहासिक धर्म है।

२. भविष्यवाणी : प्रभु, झूठा, या पागल?

यूहन्ना २:१८-२२

नि: तीसरे दिन अपने जी उठने के बारे में यहां पर यीशु मसीह स्पष्ट रुप से भविष्यवाणी करते हैं। लेकिन उन्हें लगा कि वो मन्दिर की इमारत के बारे में बात कर रहे थे।

मत्ती २६:५९-६१

नि: यहां मुकद्दमे के समय गलती से इस तीन दिन के भविष्यवाणी की चर्चा की। यह एक सार्वजनिक घटना थी

जिसके बारे में मत्ती झूठ नहीं बोल सकता था। स्पष्टता से यीशु के पुनरुत्थान की भविष्यवाणी सभी को पता थी (मत्ती १६:२१-२३)।

मत्ती २७:६१-६६

नि: यीशु ने कि हुई भविष्यवाणी सब जगह इस तरह प्रसिद्ध हो चुकी थी कि उनके कब्र पर पहरा लगाना पड़ा, एक ऐरिहासिक सत्य। मरियम ने देखा कि उन्हें कहां गाड़ा गया है (व.६१)। कब्र को एक बड़े से पत्थर के द्वारा बन्द किया गया था। इस तरह यीशु एक गांधीजी नहीं थे। वह सिर्फ एक अच्छे शिक्षक नहीं थे।

३. उनकी मृत्यु

यूहन्ना १९:३१-३४

नि: क्रूस पर यीशु को अनेक तरह की पीड़ा दी गई। उन्नीसवीं शताब्दी में किसी ने कहा कि यीशु नहीं मरे। इतिहास गवाह है कि पवित्र शास्त्रिय क्रूस की मौत से आज तक कोई जिन्दा नहीं बच पाया है। यहां पर हम यह भी देख सकते हैं कि सैनिकों ने भी इस बात की जांच की कि यीशु मर गए या नहीं इस बात की पुष्टी करने के लिये उन्होंने यीशु को भाले से छेदा भी। यह पेशेवर लोग थे, उन्हें क्रूस के मौत के बारे में पूरी जानकारी थी। और खून और पानी (व.३४) एक वैध्यकिय सबूत है इस बात का कि यीशु का हृदय फट जाने के कारण हृदयावरण में पानी भर गया था। अर्थात् वो मर चुके थे।

४. खाली कब्र

मत्ती २८:११-१५

प्र. यहूदी और मसीही किस बात में सहमत थे?
(यीशु का शरीर कब्र से गायब था)

नि: या तो शीष्यों ने या फिर किसी और ने उसे चुराया था।

मत्ती २६:५६, ६९-७५

नि: ध्यान दो कि जब यीशु को पकड़ा गया तो उनके शीष्य कैसे घबरा गए थे, कैसे पतरस ने उनका इनकार किया था।

५. शरीर का चुराया जाना

नि: शीष्यों ने नहीं पर शायद किसी और ने उनके शरीर को चुराया था, और शीष्यों ने जान बूझकर ऐसा अनुमान लगाया। तब हम उनके लेखन को सत्य मान सकते हैं, लेकिन सही नहीं।

लूका २४:३६-४३

नि: अनुमान सही नहीं होता। यह कोई अनुमान नहीं था। यदि शरीर चुराया गया तो यह सिर्फ शीष्यों का ही काम होता।

प्र. लोग झूठ क्यों बोलते हैं? (मुसिबत से बचने के लिये, पैसा कमाने के लिये, नाम कमाने के लिये, आदि)

नि: मुसिबत मोल लेने के लिये लोग झूठ नहीं बोलते। आओ हम इन शरीर चुराने वालों के बारे में जानें।

प्रेरित ४:३, १२-१३

नि: डर से भरा हुआ पतरस अब उन लोगों से जिन्होंने उसे गिरफ्तार किया है यह कह रहा है कि परमेश्वर के पास जाने का केवल एक ही मार्ग है (व.१२)। यूहन्ना और पतरस साधारण होते हुए भी अपने साहस के लिये जाने जाते हैं (व.१३)। किसी चीज़ ने इन दोनों को बदल दिया था।

नि: पौलुस जो शरीर चुराने के इस षड़यंत्र में शामिल न था आओ हम देखें कि उसने क्या लिखा है। दमिश्क जाते समय यीशु के दर्शन पाने से पहले वह कलीसिया का सताने वाला था (प्रेरित ९, २२, २६)।

१कुरिन्थियों १५:३-८

नि: सबसे महत्वपूर्ण: यीशु हमारे पापों के लिये मरे। समझो मैं तुम्हे मारता हूं और फिर तुम्हारे लिये आईस क्रिम लाता हूं। क्या हमारी सुलह हो जाएगी? नहीं। इसी तरह अच्छे कर्म

हमारे पापों की कीमत नहीं चुका सकते। हमें एक बचाने वाले (उद्धारकर्त्ता) की ज़रुरत है (व.३)।

नि: पुनरुत्थान के कई गवाह थे। एक बार करीब ५०० लोगों ने भी देखा (व.६)। पौलुस इस बारे में झूठ क्यों बोलेगा? सिर्फ कुछ ही लोगों ने अकेले में यीशु को देखा यह कहना अधिक आसान होगा। ५०० लोगों ने यीशु को देखा यह कहकर पौलुस अपने आप के लिये चुनौति खड़ी कर रहा है। उसने यह इसलिये कहा क्योंकि यह सच है।

निष्कर्श :

हर तर्क को पराजित कर देने वाले सबूत हैं। यीशु के शीष्य केवल किसी दर्शन-शास्त्र के लिये जिये या मरे एसा नहीं लेकिन ऐतिहासिक सच्चाई के लिये। किसी झूठ के लिये उन्होंने अपनी जान नहीं दी। यह सच्चाई है। अब जब आप इस सच्चाई को जानते हैं, तो इस सच्चाई के पीछे चलने से आपको क्या रोक सकता है?

प्र. इसके बारे में आप क्या करोगे? अब से एक शीष्य की तरह जीओ।

अध्याय -१४

पवित्र आत्मा

उपयोग किये गए वचन

१. प्रेरित २:३६-३८, २) युहन्ना १६:७-८
३) इफिसियों १:१३-१४ ४) इफिसियों ३:१६
५) रोमियों ८:९, १५-१६ ६) रोमियों ८:२६-२७
७) १ कुरन्थियों ६:१९-२० ८) २ कुरन्थियों ३:१७-१८
९) गलतियों ५:१६-१८,२२-२३

उद्देश्य : खोजी को प्रोत्साहन दो कि बप्तिस्मा के समय निश्चय ही उसे परमेश्वर के पवित्र आत्मा का दान मिलेगा । बप्तिस्मा के बाद पवित्र आत्मा के मद्द से हम कायम रहते हैं। यीशु में बप्तिस्मा पाए हर एक शीष्य के जीवन में वो शक्तिशाली रुप से काम करता हैं। आप शायद चाहेंगे कि इस पाठ को कलिसिया के पाठ के साथ करें क्यों कि दोनों ही हमारी मदद् करते है कि हम अन्त तक अपने अंगीकार पर टीके रहें ।

१. प्रेरित २:३६-३८

बप्तिस्मा के समय हमें पवित्र आत्मा का दान मिलता है। पवित्र आत्मा एक वरदान है।

२. यूहन्ना १६:७-८

यीशु ने एक सहायक को भेजने को वचन दिया है **(पवित्र आत्मा यूहन्ना १४:२६)** (यूनानी शब्द 'पॅराक्लेटोस' का अर्थ है, सहायक, मद्दगार, आराम देने वाला, वकील, मध्यस्ती करनेवाला या प्रोत्साहक) आत्मा को संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय से संकल्प देने या दोषी ठहराने के लिये भेजा है। (जिसमें हम भी हैं)

३. इफिसियों १:१३-१४

जब हम मसीही बनते हैं तो पवित्र आत्मा का ठप्पा हम पर लगाया जाता है। पवित्र आत्मा एक, संचय है जो हमारे उध्दार की गारन्टी देता है।

४. इफिसियों ३:१६

पवित्र आत्मासे मिली शक्ति से हम मजबूत बनते हैं।

५. रोमियों ८:९, १५-१६

यदि आप में पवित्र आत्मा नही है तो आपका मसीह से कोई सम्बन्ध नही । (व.९) हमें पुत्र होने की आत्मा मीली है। (व. १५-१६) आत्मा इस बात की गवाही देता है कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं।

६. रोमियों ८:२६-२७

हमारी कमजोरी में आत्मा हमारी मद्द करता है।(मद्दगार)

आत्मा स्वयं हमारे लिये मध्यस्ती करता है। (मध्यस्त)

७. १ कुरुन्थियों ६:१९-२०

आपका शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है।

पवित्र आत्मा आप में है। इसलिये हमारे शरीर से हमें परमेश्वर का आदर करना चाहीये।

८. २ कुरुन्थियों ३:१७-१८

आत्मा हमारी मद्द करता है कि मसीह के जैसे बनने में हम हमारा रुपान्तर करें। यह एक ''जीवनभर'' लगातार चलने वाला कार्य है। दूसरे शब्दों मे जैसे जैसे प्रभु की आत्मा हममें काम करने लगता है हम अधिकाधिक उसकी तरह बनते जाते हैं और उसकी महीमा को और अधिक दर्शाते हैं।

९. गलतियों ५:१६-१८, २२-२३

हमें आत्मा के द्वारा (जीना) चलना चाहिये । (व. १६)

हमें आत्मा के बताए मार्ग (उसकी अगुवाई, दिशा) में चलना चाहिये । (व.१८) यदि हम हमारे पापी स्वभाव के नही आत्मा की अगुवाई में चलेंगे तो हम आत्मा के फल ला सकते हैं जो हैं, प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम । (व. २२-२३)

आत्मा में आपका नया जीवन ये फल लाना चाहिये ।

निष्कर्ष : हमें पवित्र आत्मा पर निर्भर होना चाहिये जो बप्तिस्मा के समय परमेश्वर ने हममें संजोया है और उसके फलों को खोजना चाहिये ।

दूसरे उपयोगी वचन

मत्ती १२:३१* आत्मा की निन्दा (बुरा बोलना) करना एक ना क्षमा होने वाला पाप है।

प्रेरित १:८* पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरितों ने शक्ति पाई कि वे संसार के अन्त के गवाह बनें ।

प्रेरित ५:३* पवित्र आत्मा से झूठ बोला जा सकता है जैसा हनन्याहने किया ।

प्रेरित ७:५१* हम पवित्र आत्मा को रोक सकते हैं।

१ कुरुन्थियों १२:१३* सभी को एक आत्मा के द्वारा बप्तिस्मा मिला है।

इफिसियों ४:३०* पवित्र आत्मा को दुःख ना पहुँचाओ ।

इफिसियों ५:१८* आत्मा से भरे रहो

इफिसियों ६:१७-१८* वचन आत्मा की तलवार है।

१ थिस्सलुनीकियों ५:१९* आत्मा को ना बुझाओ ।

२ थिस्सलुनीकियों २:१३* परमेश्वर ने तुम्हे चुन लिया है कि पवित्र आत्मा के पवित्र कार्यों के द्वारा उध्दार पाओ ।

इब्रानियों १०:२९* हम पवित्र आत्माका अनादर कर सकते हैं।

२ पतरस १:२०-२१* वचनों की भविष्यवाणी तब हुई जब भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

अध्याय –१५

महान कार्य

उपयोग किये गए वचन

१. मत्ती ५:१४–१६ २) लूका १९:१०
३) १ तिमुथियुस १:१५–१६ ४) १ तिमुथियुस २:३–४
५) २ पतरस ३:८–९ ६) मरकूस १:१४–१८
७) मत्ती २८:१८–२० ८) रोमियों १०:१२–१५
९) प्रेरित ८:४ १०) प्रेरित ११:१९–२१

उद्देश्य : मसीहियों को यीशु के इस महत्वपुर्ण कार्य – खोए हुओं को ढूँढना और बचाने के बारेमें बताएँ ताकि ये उनका भी कार्य बने। इस बुलावे को मानें कि जाकर सभी राष्ट्र के लोगों को शीष्य बनाओं।

१. मत्ती ५:१४–१६

यीशु ने अपने शीष्यों को सिखाया कि उन्हे जगत की ज्योति बनना है। उसने उन्हें चुनौती दी कि कभी इस ज्योति को ना बुझाओ और ना छुपाओं, परन्तु इस ज्योति को सभी मनुष्यों के सामने खुला करों ।

आपके बदले हुए जीवन के द्वारा मसीह को संसार में लाने से परमेश्वर की महिमा बढेगी ।

उद्देश : आपके लिये मसीह को बाँटना क्यों महत्वपूर्ण हैं ?

२. लूका १९:१०

यीशु खोए हुओं को ढूँढकर बचाने आया है।

यीशु का उद्देश्य था कि खोए हुओं (संसार) को उध्दार दिलाए ।

३. १ तिमुथियुस १:१५–१६

यीशु इस संसार में पापियों को बचाने आए ।

याद रहे कि इस संसार के लिये आप एक उदाहरण हो कि परमेश्वर किसी को भी बचा सकते हैं। यदि परमेश्वर आपको बचा सकते हैं तो वो किसी को भी बचा सकते हैं।

४. १ तिमुथियुस २:३–४

परमेश्वर चाहते हैं कि सभी मुनष्य उध्दार पाएँ और सच्चाई को जानें ।

५. २ पतरस ३:८–९

परमेश्वर चाहते हैं कि हर मनुष्य पश्चाताप करे।

परमेश्वर का धीरज मनुष्यों को पश्चाताप करने का मौका देता है।

परमेश्वर न्याय में देरी करते हैं ताकि मनुष्य पश्चाताप कर सके ।

योजना बनाएँ – कैसे हम परमेश्वर की योजना में सही ठहरें ?

६. मरकुस १:१४–१८

यीशु के धार्मिक कार्य की शुरुवात से ही वे लागों को मनुष्यों के पकडने वाले बनने की चुनौती देते हैं । ''मेरे पीच्छे हो लो...

मैं तुम्हे मनुष्यों के मच्छुवे बनाऊँगा'' यीशु ने अपना उद्देश्य लिया और उनको सौंप दिया ।

उनकी प्रतिक्रिया ? तुरन्त ।

७. मत्ति २८:१८–२०

यीशु ने अपने शीष्यों को सभी राष्ट्रों को शिष्य बनाने के कार्य में क्रियाशील रहने की आज्ञा दी ।

''सभी आज्ञा मानो'' में यह भी आता है कि उनके पीच्छे चलने वालों को इस महान कार्यको करने की आज्ञा भी माननी है।

यीशु की योजना थी बढोतरी (गुणाकार) जो आप से शुरु होता है।

क्रिया – क्या हम जाने के लिये तैयार हैं ?

८. रोमियों १०:१२–१५

वचन कहता है जो कोई यीशु का नाम लेगा वह उध्दार पाएगा ।

लेकिन बिना विश्वास किये लोग कैसे उध्दार पाएँगे ?

बिना सुने वे कैसे विश्वास कर सकते हैं ?

जब तक कोई प्रचार ना करे लोग कैसे सुनेंगे ?

जब तक किसी को प्रचार करने के लिये भेजा ना जाए वह प्रचार कैसे करेगा ?

क्या आप प्रचार करने के लिये भेजे जाने की इच्छा रखते हो ?

क्या आप वो हो जिसके खूबसूरत पैर हैं और परमेश्वर का वचन लोगों तक पहूँचाने की इच्छा रखते हो ?

९. प्रेरित ८:४

सताए गए मसीही जहाँ भी गए उन्होंने अपने आप प्रचार किया ।

वे शायद साधारण मसीही थे ना कि किसी कलिसिया के मशहूर अगुवे । आप क्या करना चाहते हो ?

१०. प्रेरित ११:१९-२१

वे लोग सताव के कारण बिखर गए थे लम्बा सफर तय करके दूसरे शहरों मे गए ताकी वहाँ के लोगों को मसीह का सुसमाचार सुना सकें ।

परमेश्वर का हाथ उनपर था और कई लोगों ने विश्वास लाया ।

आप क्या करोगे ? लोगों को मसीह का सुसमाचार सुनाने की एक योजना बनाओ ।

निष्कर्श : एक मसीह होने के नाते यीशु का महान धार्मिक कार्य हमेशा हमारे मन में होना चाहिये । आप तक कोई आया था और आभार प्रदर्शन करने के लिये आपको भी किसी के पास जाना चाहिये । जितने ज्यादा लोगों से हो सके उतने ज्यादा लागोंसे, हमारे मित्रों से, रीश्तेदारोंसे, हमारे साथ काम करने वाले और स्कूल में पढने वालो मित्रों के साथ और जो भी मिले उसके साथ हमें हमारा विश्वास बाँटना चाहिये । प्रचार आपके उध्दार का फल है। जब आप उध्दार पाते हो तो आप चाहते हो कि आपकी तरह और लोग भी उध्दार पाएँ । खोजी की मद्द करें कि कैसे वह अपने परिवार, अपने दोस्तों या अजनबियों के साथ अपने विश्वास को बाँटे । उसके साथ बहार जाओ और उसकी मद्द करो कि मनुष्यों का मछुवारा बने ।

Notes

Notes

Notes

Notes

Notes

Notes

Notes

सुसमाचार के रक्षक पाठ

(Revised 2010)

इंडियन चर्च ऑफ क्राईस्ट

Printed and Published bu Indian Churches of Christ
for in house circulation only